भारतीय युवा कैथोलिक छात्र
युवा छात्र संचलन

(YOUNG CATHOLIC STUDENTS / YOUNG STUDENTS MOVEMENT)

एक नए समाज की स्थापना

ईश्वर का राज्य

स्वयं बदलें - दूसरों को बदलें

- Registered Office -

YCS/YSM NATIONAL OFFICE, ARCHDIOCESAN PASTORAL CENTRE,
25 ROSARY CHURCH ROAD, SANTHOME, CHENNAI – 600004, INDIA
Email: ycsysmindia@gmail.com, www.facebook.com/ycsindia
twitter.com/ycsysmindia, Website: www.ycsysmindia.com

- Working Office -

YCS/ YSM INDIA
Delhi Archdiocesan Youth Office
Yusuf Sadan, 1 Ashok Place, New Delhi 110001

;qok dFkkfyd Nk= lpyu
;qok Nk= lpyu ¼okbZ- lh- ,l-½ dk izrhd fpUg

विश्व का नक्शाः युवा कैथोलिक छात्र संचलन पूरे विश्व में फैला हुआ है। इस संचलन के द्वारा छात्र पूरे विश्व में बदलाव लाने की कोशिष करते है। छात्र अपने पैरों को जमीन में स्थिर रूप से लगायें है। अंग्रेजी के अक्षर **YCS/YSM** छात्र के आाकार में बनाया गया है जिनके हाथ में जलती हुई मशाल है। वह अपने आप में रोशनी देखते है और इस रोशनी द्वारा दुनिया का अंधकार दूर करते है।

क्रूस का चिन्हः ईश्वर के प्रति और एक दूसरे के प्रति हमारे संबंध को इंगित करता है। ईश्वर की कृपा से हम दूसरों के जीवन में बदलाव ला सकते है। क्रूस मुक्ति का भी प्रतीक है। यह संचलन सब छात्राओं के लिए है। क्रूस का यह भी प्रतीक है कि इस संचलन की शुरूआत ईसाई धर्म से जुडी हुई है। तिरंगा यह दर्शाता है कि यह संचलन राष्ट्रीय एकता के लिए कार्य करता है। देखना, परखना, विमर्ष करना और कार्यारत होना इय संचलन का कार्य करने का तरीका है। छात्र किसी भी धर्म या जाति का हो पर इस संचलन में सब बराबर है, सभी इसके सदस्य है।

Hkkjrh; ;qok dSFkksfyd Nk=
;qok Nk= lqpyu

	LFkkiuk	iqekf.kr	ekU;rk
¼vUrjkZ"Vªh;½	**1929**	**1946**	**1954**
¼Hkkjr esa½	**1936**	**1966**	**1969**

,d u, lekt dh LFkkiuk
bZ'oj dk jkT;

Lo;a cnyo & nwljksa dks cnyo

- WORKING OFFICE -

YCS/ YSM INDIA
Delhi Archdiocesan Youth Office
Yusuf Sadan, 1 Ashok Place, New Dlehi 110001

- Registered Office -
YCS/YSM NATIONAL OFFICE, ARCHDIOCESAN PASTORAL CENTRE,
25 ROSARY CHURCH ROAD, SANTHOME, CHENNAI – 600004, INDIA
Email: ycsysmindia@gmail.com, www.facebook.com/ycsindia
twitter.com/ycsysmindia, Website: www.ycsysmindia.com

YCS/YSM India तमिलनाडु सरकार के तहत पंजीकृत एक सार्वजनिक धर्मार्थ ट्रस्ट है। इसका पंजीकरण 24 मई 1997 को हुआ। जिसे दस्तावेज़ क्र. 475/1997 भारतीय ट्रस्ट एक्ट 1882 के तहत यंग क्रिश्चियन स्टूडेंट/यंग स्टूडेंट्स मूवमेंट के नाम से जाना जाता है। ।

YCS/YSM, एक संचलन है, जो **IYCS** इंटरनेशनल से जुड़े सभी धर्मों के छात्रों के लिए बना है। यह एक गैर–लाभकारी संगठन है, जिसे संयुक्त राष्ट्र, उसके निकायों और एजेंसियों द्वारा एक अंतरराष्ट्रीय गैर–सरकारी संगठन के रूप में मान्यता प्राप्त है। इसे संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक आयोगों (**ECOSOC**) और संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (**UNESCO**) के साथ परिचालन की स्थिति के साथ विशेष परामर्शात्मक दर्जा प्राप्त है।

First edition	: 1000 copies
Second edition	: 1000 copies
Third Edition	: 1000 copies
Fourth edition	: 500 copies (Hindi)

Published by : **YCS/YSM India**

Registered Off : **YCS/YSM National Office,**
Archdiocesan Pastoral Centre,
25, Rosary Church Road,
Santhome, Chennai - 600004
E-mail: ycsysmindia@gmail.com
website: www.ycsysmindia.com

Working Off : **YCS/YSM India, Yusuf Sadan,**
1 Ashok Place, New Delhi - 110001

©यह पुस्तक बिना प्रकाशक की अनुमति के किसी भी प्रकार से न तो बेची जाए, और न ही किसी भी रूप में प्रकाशित की जाए।

Price :

For copies kindly contact working office

doy futh ipyu d fy,

विषय सूची

संचलन का प्रतीक	02
कैथोलिक छात्र/युवा छात्र संचलन की प्रार्थना	06
कैथोलिक छात्र/युवा छात्र संचलन का धर्मसार	06
युवा कैथोलिक छात्र/युवा छात्र संचलन के सदस्य का संकल्प	07
संचलन के सदस्यों के लिए पंच मार्ग	08
युवा कैथोलिक छात्र/युवा छात्र संचलन क्या है?	09
संचलन का इतिहास	10
दूरदर्षिता, लक्ष्य और उद्वेष्य	13
संचलन की संरचना	19
किषोरों के लिए क्यों यु.खी.छा./यु.छा.सं ?	21
प्रशिक्षण कार्यक्रम	27
संचलन की षुरूआत कैसे करें?	30
दल को किस तरह से शुरु किया जाए	42
संचलन की कार्य प्रणाली	45
संचलन की आध्यात्मिकता	48
यु.खी.छा./यु.छा.सं की कुछ गतिविधियाँ	53
युवा कार्यकर्त्ताओं के लिए	57
अनुप्राणदाता में होनेवाले गुण	58
अध्ययन सत्र और राष्ट्रीय परिषद के विषय	61
राष्ट्रीय कार्यालय की गतिविधियाँ	63
यु.खी.छा. /यु.छा.सं. का लक्ष (सपना) और समर्पण	64
YCS Anthem	67
Oath	67

कैथोलिक छात्र/युवा छात्र संचलन की प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता परमेश्वर, आपने पूरे ज्ञान और प्रेम में, हमें बनाया और भारतीय कैथोलिक छात्र/युवा छात्र संचलन के सदस्य बनने के लिए हमें चुना। आपने हमें कई भाषाओं, धर्मों और संस्कृतियों के साथ भारतीयों को आशीर्वाद दिया है। हमें इस विविधता की सराहना करने के लिए ज्ञान दें। जीवन की समीक्षा के माध्यम से, भारतीय कैथोलिक छात्र/युवा छात्र संचलन हमें स्वार्थ, भेदभाव, घृणा से बचने के लिए सिखाता है और हमें एकता में जीने का आग्रह करता है, जो सहयोग और एकजुटता का निर्माण करता है। हमें सच्चे न्याय और स्वतंत्रता के लिए काम करने और दूसरों की सेवा करने की शक्ति प्रदान करें, इस प्रकार हम एक "बेहतर समाज" का निर्माण कर सकें जहाँ सभी लोग आपके बच्चों की गरिमा के साथ रहें। आमेन

कैथोलिक छात्र/युवा छात्र संचलन का धर्मसार

ईश्वर ने सभी मनुष्यों को अपनी छवि और समानता में बनाया गया है, गरिमा के बराबर। जब इस गरिमा को रौंदा जाता है, तो यह सृष्टिकर्त्ता के प्रति एक अपराध है। इस गरिमा को बढ़ाने और उसकी रक्षा करना हर इन्सान की जिम्मेदारी हैं।

भारतीय युवा कैथोलिक छात्र/युवा छात्र संचलन, छात्रों द्वारा और छात्रों के लिए बनाया गया संचलन है जो, इस मिशन को पूरा करने के लिए तत्पर है। इस प्रक्रिया में, संचालक और अनुप्राणदाता उनके साथ हैं। भारतीय कैथोलिक छात्र/युवा छात्र संचलन एक कार्य उन्मुख संचलन है, जो स्वभाव में उदार है और इसका उद्देश्य ऐसी संरचनाओं और प्रणालियों को हटाना है जो मानव गरिमा का सम्मान नहीं करते हैं। आध्यात्मिकता और जीवन की समीक्षा से प्रेरित होकर (देखना परखना और कार्यारत होना/जागरूकता, विचार विमर्श और कार्य) हमारे जीवन के तरीके के रूप में, कमजोर और हताश छात्रों को उनके संघर्षों के साथ एकजुटता में स्वयं से परे हो जाने के लिए रूपांतरित और सशक्त बनाया जाता है। संपूर्ण मानवता के साथ और हर क्रिया के दिल में प्यार के साथ व्यक्तिगत संबंधों के माध्यम से, भारतीय कैथोलिक छात्र/युवा छात्र संचलन, मानव व्यक्तियों को एक परिवार, एक निर्माता के दिल के बाद एक समुदाय बनने में सक्षम बनाता है जिसकी दया, देखभाल और न्याय इसका मनोभाव है। एक वैकल्पिक समुदाय हमारी पहुंच के भीतर है जब हम अपना विश्वास मानव भलाई में लगाते हैं, जो ईश्वर से प्रेरित होता है।

युवा कैथोलिक छात्र/युवा छात्र संचलन के सदस्य का संकल्प

मैं एक जीवित और प्यार करने वाले ईश्वर को मानता हूँ, जो मेरे जीवन की हर घटना में मौजूद और सक्रिय है। मैं भगवान की छवि और समानता में बनाया गया हूँ, और हर इन्सान भी। मैं संचलन के सभी सदस्यों का सम्मान करने और संचलन में समानता के लिए काम करने का वादा करता हूँ। मैं अपने माता–पिता, बड़ों और अनुप्राणदाताओं का सम्मान करने का वादा करता हूँ, उनके मार्गदर्शन और उनके साथ काम करने के लिए तैयार हूँ।

मैं अपने संचलन के उद्देश्यों को स्वीकार करने का वादा करता हूँ और हमेशा संचलन द्वारा प्रचारित समानता, प्रेम, न्याय और शांति के उन मूल्यों को प्राप्त करने का प्रयास करता हूँ। मैं संचलन की आध्यात्मिकता को जैसे ईश्वर के अनुभव में, मानवीय गरिमा की बहाली, अन्य धर्मों के साथ सम्मान और संवाद और कार्रवाई की आध्यात्मिकता को स्वीकार करता हूँ।

मैं जीवन की समीक्षा, आंदोलन की पद्धति को स्वीकार करता हूँ और समाज में अपनी भूमिका खोजने के लिए इसे विकास की प्रक्रिया के रूप में अभ्यास करने का प्रयास करता हूँ। मैं सेवा के माध्यम से नेतृत्व के विचार को स्वीकार करता हूँ और अपने लक्ष्य "एक नए समाज" को प्राप्त करने के लिए खोज और संघर्ष में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करता हूँ।

मैं संचलन के विकास के लिए अपने प्रतिबिंब और सेवा में योगदान करने के लिए अपना सर्वश्रेश्ठ देने का वादा करता हूं जिसे मैं स्वीकार करता हूं, समाज में अपने जीवन और जिम्मेदारी को आकार दूंगा।

मैं संचलन और मेरे पड़ोसी के कल्याण को प्रमुख चिंता के रूप में स्वीकार करने का वादा करता हूँ और संचलन के आदर्शों के खिलाफ पक्षपात या किसी भी चीज में लिप्त नहीं हूँ।

मैं राष्ट्रीय एकीकरण, सामंजस्यपूर्ण जीवनयापन, पर्यावरण संरक्षण और हर इन्सान को गरिमा सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास करने का वादा करता हूँ।

मैं लोगों, जाति, पंथ, भाषा, धर्म और लिंग सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर, भेदभाव नहीं करूँगा। मैं किसी भी प्रकार के कुकर्मों में रिश्वत नहीं दूँगा या लूँगा। मैं बेसहारों की आवाज बनूँगा।

मैं ऐसे लोगों और आंदोलनों से हाथ मिलूंगा जो मानवाधिकार और सम्मान, न्याय, शांति और समानता को बढ़ावा देते हैं। मैं सच्चा, ईमानदार, खुला, स्पष्ट, मेहनती, प्रतिबद्ध और समर्पित होने का वादा करता हूँ।

मैं अपनी जिम्मेदारी को पूरी तरह से जानते हुए यह प्रतिज्ञा लेता हूँ, परमेश्वर से ताकत माँगता हूँ और मेरे अनुप्राणदाताओं और साथियों के समर्थन और प्रोत्साहन का अनुरोध करता हूँ। मैं इस विकल्प की पेशकश करता हँ और "एक बेहतर समाज" के कारण संचलन में सभी सदस्यों और अनुप्राणदाताओं के साथ एकजुटता का संकल्प लेता हूँ।

युवा कैथोलिक छात्र/युवा छात्र संचलन के सदस्यों के लिए पंच मार्ग

0;fDrxr ifjorZu ds fy, iap ekxZ

1- fo'o 'kkfr ds fy, izkFkZuk djukA
शांति तथा भाईचारे का दूत बनने के लिए अपनी धार्मिक कार्य पद्धति के अनुसार प्रति दिन एक बार विश्व शांति के लिए प्रार्थना करना।

2- g¶rs esa ,d le; dk Hkkstu R;kxukA
निर्धन तथा जरुरतमंदों के प्रति अपनी आत्मीयता या सहानुभूति व्यक्त करने के लिए हफ्ते में एक समय का भोजन त्यागना।

3- izfrfnu ,d vPNk dk;Z djukA
मानवता की सेवा के लिए निस्वार्थ भाव से प्रतिदिन एक अच्छा कार्य करना। आज के समाज में इसकी बहुत ज्यादा जरुरत है। हमे एक दूसरे के प्रति, हमारे देश के प्रति संवेदनशील बनना है।

4- vfHkHkkodksa] f'k{kdksa rFkk leLr ekuo tkfr dk lEeku djukA
हमारे माता पिता, गुरू शिक्षक भगवान के समान होते है। उन्होंने हमें जन्म दिया है और पढ़ाया है। केवल माता पिता ही नहीं समस्त मानव जाती को सम्मान करना जरूरी है। यह सम्मान देना ईश्वर का सम्मान करने के बराबर है। क्या हम अपने घर पर नौकरी करनेवालों का सम्मान करते है? क्या हम गरीब, लाचारों का सम्मान करते है। यह ईश्वरीय गुण है।

5- /kjrh ek dk vkn rFkk bldh lalk/kuksa dh j{kk djukA
प्रकृति ने हमें कई संसाधन दिये है, जो हमारे उपयोग के लिए है। उसे सही मात्रा में उपयोग करना हमारा कर्तव्य है। अगली पीढ़ी के लिए इन संसाधनों को बचाके रखना ज़रूरी है। पानी, बिजली, पेट्रोल, डीसेल का सही मात्रा में उपयोग करना, पेड़ पौदों का लगाना, ना सिर्फ हमारा कर्तव्य है बल्कि हमारी ज़िम्मेदारी भी है।

"जिंदगी में किसी से अपनी तुलना मत करो जैसे चांद और सूरज की तुलना किसी से नहीं की जा सकती क्योकि यह अपने समय पर ही चमकते है।"

युवा कैथोलिक छात्र/युवा छात्र संचलन क्या है?

;g ,d Nk= lqpyu gS tgk¡ 8 ls 10 Nk= feydj viuh leL;kvksa dks] vuqHkoksa dks] viuh #phZ rFkk fpUrkvksa dks ,d nwljs ds lkFk lk>k djrs gSA vkSj bl lqpyu dh dk;Z iz.kkyh ds ek/;e ls ¼nksLrkuk] ij[kuk] dk;Z'kkyk gksuk½ mu leL;kvksa dk gy fudkyrs gSA

;g u=Rko if'k{k.k nsusokyk lqpyu ugha gSA
;g ifrHkk ;k dkS'ky dks vkxs c<+kusokyk lqpyu ugha gSA
;g dk;Z{ks= esa lg?kfVr djusokyk lqpyu ugha gSA
Lkekt lsok djus okyk lg?kVu ugha gSA
;g lqpyu LoPNrk ,oa j[kj[kko djus ds fy, ugha gSA

cnyus esa

;g fodkl dks c<+kok nsusokyk lqpyu gS
eY;ksa dks djds vuqHko izkIr djuk fl[kkrk gS
thou esa fn'kk ykrk gS
;g ,d lqy] ny **(cell based)** vk/kkfjr lqpyu gSA

संचलन का इतिहास

इस विद्यार्थी संचलन की जड़ समानांतर रुप से पहले सन् 1920 में यूरोप के युवा मज़दूरों में जमी। उस काल में सारे संसार के मज़दूरों और किसानों में मनुष्य (व्यक्ति) की प्रतिष्ठा तथा अपने वातावरण एवं कल्याण के प्रति एक चेतना जगी। जोसेफ कार्डाइन, जो एक कारखाने में काम करने वाले एक मज़दूर के पुत्र थे, बाद में पुरोहित बने और कार्डिनल के पद तक पहुँच गए। बेल्जियम में काम करने वाले युवा मज़दूरों के एक दल को अनुप्राणित किया कि वे अपने स्वयं के प्रयासों से अपनी उन समस्याओं का समाधान खोजें जिनका उन्हें सामना करना पड़ता है। आप उस मछली को दवा नहीं दें जो गंदे पानी से पीड़ित है। कार्डिनल कहते थे, 'आपको वह पानी बदलना पड़ेगा ... वह वातावरण बदलना पड़ेगा।' मजदूरों के जीवन की वास्तविकता में इसी प्रकार के परिवर्तन पर प्रभाव डालने के लिए उन्होंने 'देखो; परखो; कार्य करो' की पद्धति अपनाई।

जो विद्यार्थी अपने छात्र जगत में परिवर्तन लाना चाहते थे, शीघ्र ही दल के इन मज़दूरों के रास्ते पर चल पड़े। वे युवा ख्रस्तीय छात्र के रूप में जाने पहचाने लगे।

Sr. Jeanne Devos

v- Hkkjrh; lpyu%&

इसकी जड़ें भारत में 1950 में पाई गईं। भारत के विभिन्न भागों में सन् 1960 से विद्यार्थियों के कुछ दल जो अपने आप को युवा ख्रस्तीय छात्र कहते थे, स्वतंत्र रुप से मिलने लगे। पर उनकी प्रतिस्थापना तथा उद्देश्यों में बहुत कम समानता होती थी। एशिया में युवा आंदोलन का विस्तार करने वाले कार्यकर्ताओं तथा अंतरराष्ट्रीय युवा ख्रिस्तीय छात्र द्वारा इधर–उधर कुछ संबंध स्थापित कर लिए तथा दौरे कर लिए जाते थे। 1961 में वाई.सी.एस. के साथ पहला संपर्क जर्मनी से आये वाई.सी.एस. के कार्यकर्ता और श्रीलंका के एक स्वयं सेवक की यात्रा के साथ था। 1960–1962 में ऑस्ट्रेलिया के वाई.सी.डब्ल्यू. कार्यकर्ता मिस बेट्टी किंग की मदद से चेन्नई और बैंगलोर में वाई.सी.एस. इकाइयों का गठन किया गया था।

सन् 1964 में मद्रास की सिस्टर जॉन डेवोस आई. सी. एम. की प्रेरणा से मद्रास और बैंगलोर के ऐसे कुछ दलों ने आपस में विचार–विमर्ष तथा आपसी वैचारिक आदान–प्रदान करना शुरु किया। जनवरी 1966 में युवा ख्रस्तीय छात्र एक आंदोलन

जैसा एक अध्ययन क्षेत्र के रूप में आरंभ हुआ। इस सत्र का आयोजन मद्रास में हुआ जिसमें मद्रास और बैंगलोर दोनों शहर के छात्रों के अतिरिक्त अंतर्राष्ट्रीय युवा खस्तीय छात्र के अनुप्राणदाता और एशिया में इस आंदोलन के विस्तार के कार्यकर्ता भी उपस्थित थे। सभी सदस्य चूँकि खस्तीय ही थे। अतः इस सत्र के समय महत्वपूर्ण अवसरों पर खीस्तीय धार्मिक क्रियाएँ जैसे बाइबल अध्ययन सत्र एवं इसी से मिलते जुलते कार्यक्रम ही थे।

Miss Betty King

सन् 1968 में मद्रास में विद्यार्थियों के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन हुआ जिसमें भारत में इस आंदोलन के लिए एक मार्गदर्शक की रुपरेखा तैयार की गई। इसके दूसरे ही वर्ष दिसंबर 1969 में जब अंतर्राष्ट्रीय युवा आंदोलन द्वारा इसे एक सहयोगी आंदोलन के रुप में स्वीकार कर लिया गया तथा सी. बी. सी. आई. (भारत के कैथोलिक धर्माध्यक्षों की सभा) द्वारा भी इसे मान्यता मिल गई। तब पुणे में इसकी पहली राष्ट्रीय परिषद की बैठक हुई। वहाँ पर इन प्रतिनिधियों ने इस आंदोलन के सदस्य एवं कार्यों का मूल्यांकन किया जैसे कि भारत के युवा छात्रों की आवश्यकता तथा उनकी आकांक्षाएं क्या है।

इस समय तक गैर खस्तीय छात्रों ने भी इस आंदोलन के प्रति अपनी रुचि दिखाई और 1970 तक विभिन्न धर्मों के अनुयाई छात्रों के अनेक दल स्थापित हो गए और वे युवा छात्र आंदोलन के रूप में पहचाने जाने लगे। 14 आगस्त 1970 के दिन अंतर्राष्ट्रीय युवा खिस्तीय छात्र (IYCS)संचलन ने मान्यता दी। अब भरतीय युवा कैथोलिक छात्र/युवा छात्र संचलन अंतराष्ट्रीय स्थर पर पूर्ण सदस्य है।

इस आंदोलन के प्रारंभिक वर्षों में व्यक्तित्व का विकास, धार्मिक स्थान तथा सामाजिक कार्य जैसे विषयों पर अधिक दिलचस्पी ली जाती थी। सन् 1971 तक इस आंदोलन में अपने राष्ट्र की समस्याओं से जुड़ जाने की भावना (ज्ञान) गहरी होना शुरु हुई। बहुत से सदस्य व्यक्तिगत रूप से बांग्लादेश में शरणार्थियों की सेवा करने गए जबकि अपने ही क्षेत्र से इनके दलों ने उन दुर्भाग्य से सताए हुए लोगों के लिए चंदा इकट्ठा किया।

अनुप्राणदाताओं के प्रशिक्षण के लिए प्रथम आयोजन बैंगलोर में और अनुप्राणदाताओं तथा दल नायकों के लिए प्रतिष्ठापना सत्र का आयोजन मुंबई में हुआ। सामाजिक चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व यह दोनों ही तत्व इस संचलन पर धनात्मक प्रभाव डालने लगे जिन्हें वह अपनी प्रतिष्ठापना और उद्देश्य मानने के लिए तैयार हो गया। और यह बैंगलोर की तीसरी राष्ट्रीय परिषद में स्थाई रूप से स्वीकार कर लिया गया।

दस वर्ष से अधिक समय तक राष्ट्रीय अनुप्राणदाता के रूप में काम करने के बाद सिस्टर जॉन देवॉस ने सन् 1975 में नागपुर महाधर्मक्षेत्र के फादर जॉन मोंतेरो को सारी जिम्मेदारियाँ सौंप दीं। सी. बी. सी. आई. युवा आयोग के गठन के साथ वाई. सी.एस. और वाई. एस. एम. को सी. बी. सी. आई. द्वारा आधिकारिक तौर पर सितंबर 1981 में राष्ट्रीय कैथोलिक संगठन के रूप में मान्यता दी गई, जो युवा और मानवता की सेवा में लगा हुआ है। उसके बाद कई पुरोहितों ने इस संचलन का कार्य भार संभाला। भारत के वर्तमान राष्ट्रीय अनुप्राणदाता फा० चेतन मचादो है।

orleku fLFkfr%

आज यह संचलन विश्व के पांचों महाद्वीपों में फैल गया है जिनमें दक्षिणी,दक्षिणी पूर्वी तथा सुदूर पूर्व के देश भी शामिल है। इनमें भारत का संचलन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। स्वयं भारत ही में युवा कैथोलिक छात्र/युवा छात्र संचलन के विभिन्न वर्गों के सदस्यों की संख्या 32000 से ज्यादा है जो देश के 12 क्षेत्रों में फैले हैं। भारत में 132 लातीनी धर्मक्षेत्रों में अब 48 धर्मक्षेत्रों में इस संचलन की उपस्थिति है। 700 से अधिक अनुप्राणदाता इसे आगे बड़ा रहे है।

युवा कैथोलिक छात्र/युवा छात्र संचलन की सदस्यता अब सभी छात्रों के लिए है। यह सिर्फ हाई स्कूल तक ही सीमित नहीं है। कई क्षेत्रों में अन्य धर्म के सदस्यों की संख्या में वृद्धि हो रही है। जूनियर तथा तकनीकी महाविद्यालय के छात्र तथा ऐसे युवा छात्र छात्राएं जो किसी विशेष पाठ शालाओं में नहीं पड़ते उनको भी प्रायोगिक आधार पर इस संचलन में सम्मिलित किया जा रहा है। और ना ही यह संचलन सिर्फ नगरी क्षेत्रों तक ही सीमित है राष्ट्रीय परिषद की चौथी सभा में यह आशा व्यक्त की गई थी कि इस संचलन का विस्तार ग्रामीण क्षेत्रों में क्षेत्रीय भाषाओं द्वारा किया जाए। ऐसी आशा की जाती है कि इस प्रकार का झुकाव बराबर बना रहेगा कि या संचलन मानवीय स्रोतों से बल प्राप्त कर सकेगा जो कि बहुत बड़ी मात्रा में ग्रामीण क्षेत्रों में पाया जाता है

हमारे देश के कई क्षेत्रों में आज यह संचलन छात्रों की सेवा में काफी आगे बढ चुका है। एक नए समाज की स्थापना में उनका योगदान महत्वपूर्ण है। इस संचालन ने सक्रिय और गतिशील चर्च नेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं और उदारवादियों का गठन किया है जो पूरे देश में लोगों के सामाजिक –आर्थिक– राजनीतिक–धार्मिक कल्याण की प्रक्रिया में शामिल हैं।

"जिनमें अकेले चलने का होंसला होता हैं, उनके पीछे एक दिन काफिला होता हैं।"

दूरदर्शिता, लक्ष्य और उद्देश्य

njnf'kZk% एक नए समाज को विकसित करना, जहाँ लोग सद्भाव में रहते हैं, जहाँ व्यक्ति की संपूर्ण वृद्धि के लिए पूरी स्वतंत्रता है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान दिया जाता है, इसलिए शांति, प्रेम, सच्चाई, न्याय और समानता को महत्व देता है।

y{;% ''एक नए समाज की स्थपना'' – '' निष्पक्ष समाज''– और ईश्वर का राज्य।

m}ŕ';% 'स्वयं बदलो–दूसरों को बदलो' - इसका अर्थ है...

- ☐ समाज के प्रति अपने विश्वास और प्रतिबद्धता को बढ़ावा देने और मजबूत करने वाले छात्रों और युवा किशोरों की व्यक्तिगत वृद्धि को सक्षम करने के लिए।
- ☐ छात्रों को धर्म की बेहतर समझ और उनके जीवन में ईश्वर के गहरे व्यक्तिगत अनुभव को सक्षम करने के लिए।
- ☐ क्षेत्रीय, धर्मप्राँतीय और यूनिट स्तरों पर संचलन को शुरू करने, व्यवस्थित बनाने, पुनर्जीवित और मजबूत करने के लिए।
- ☐ छात्रों को समय के संकेतों के अनुसार दैनिक जीवन स्थितियों को महसूस करने और प्रतिक्रिया करने में मदद करने के लिए।
- ☐ जागरूकता पैदा करने और युवा को एक मुक्ति बल के रूप में समाज के जीवन में भाग लेने के लिए सक्षम बनाने के लिए।
- ☐ सभी स्तरों पर एक बुनियादी मानव समुदाय के निर्माण की दिषा में छात्रों को उन्मुख करने के लिए।
- ☐ युवाओं को आत्म–खोज, व्यक्तित्व विकास, पारस्परिक कौशल, विश्लेशणात्मक और महत्वपूर्ण सोच, परामर्श, गठन, और समूह प्रतिबिंब के माध्यम से प्रशिक्षित करना।
- ☐ विश्वास और सामाजिक मानदंडों के लिए प्रतिबद्ध एक अच्छा और प्रभावी नेतृत्व को बढ़ावा देने के लिए।
- ☐ छात्रों को उनके मूल्यों, दृष्टिकोण और विश्वास को मजबूत करके उनकी जिम्मेदारियों को निभाने में सक्षम बनाने के लिए।
- ☐ ग्रामीण और असंगठित छात्रों / युवाओं को संगठित करने के लिए अधिक से अधिक प्रयास करना और उनके अभिन्न विकास के लिए उन्हें तैयार करना।
- ☐ अंतर–धार्मिक संवाद को बढ़ावा देने वाली एकता, शांति और सद्भाव लाने के लिए।
- ☐ पर्यावरण–अध्यात्म और समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देना।

- ☐ अन्य समान और इसी तरह के आंदोलनों और संगठनों के साथ सहयोग करने के लिए।
- ☐ पूरी दुनिया में युवाओं के साथ सहचर्य और एकजुटता में काम करने और युवा छात्रों की वास्तविक और ठोस जरूरतों की सेवा करने के लिए।

जब भारत में यु.खि.छ. संचलन शुरू किया गया तब इसके प्रतिस्थापन में मूल्यांकन एवं विकास के लिए विशेष प्रक्रिया का प्रयोग हुआ है। इसी विकास के आधार पर भारत की परिस्थितियों को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों के जीवन पर प्रकाश डाला गया है।

शुरू में इस संचलन में केवल ख्रिस्तीयों को ही लिया गया था और इसमें धार्मिक कार्यों, व्यक्तित्व के विकास एवं सामाजिक कार्यों पर ही ध्यान दिया गया था। 1972 से इसमें गैर ख्रिस्तीयों को भी लिया जाने लगा है। इस संचलन के जो मूल तत्व हैं उनको अभी महत्वपूर्ण माना जाता है। पर आज वे 'सामाजिक परिवर्तन' की शिक्षा के रूप में दिखाते हैं। इस संदर्भ में तथा युवा स्वप्न को ध्यान में रखकर यु.ख्रि.छ. /यु.छा.सं की चौथी राष्ट्रीय सभा ने 'ईश्वर राज्य की स्थापना' के लिए एक 'नव समाज' और 'नए भारत' के निर्माण का प्रयत्न शुरू किया। यह संचलन बहुमुखी है अर्थात दूसरों को सिखानेवाला पर साथ ही साथ अपने सदस्यों के व्यक्तित्व विकास के प्रति उदासीन नहीं रहता।

संचलन की प्रतिष्ठापना हमें वह दिशा दिखाती है जिसकी और हमें बढ़ना है परंतु इससे भी महत्वपूर्ण यह कहना है कि हम इस छोटी सी अवधि में क्या प्राप्त करना चाहते हैं?

यह संचलन नेता, जिम्मेदार व्यक्ति, दिल और दिमाग से परिपक्व तथा प्रगतिशील जिम्मेदारियों को पूरा करने की क्षमता रखने वालों को बनाने का काम लेता है। हम उन दूसरे आंदोलनों से भी हाथ मिलाते हैं जिस के उद्देश्य हमारे उद्देश्य के समान सृजनात्मक है, जो सच्चाई, न्याय, प्रेम और शांति के लिए कार्य करते हैं। क्योंकि हम जानते हैं कि ईश्वर अपने महान कार्यों के लिए हमें बुलाता है। हम यहां स्व. पंडित जवाहरलाल नेहरू के शब्दों की याद करते हैं।

यदि पश्चिमी देशों में लोग अपनी समस्याएं सुलझाना चाहते हैं तो वे अपने आप से पूछते हैं कि ''हमें क्या करना चाहिए'' पर हम भारतवासियों को कोई सम्मान समस्या सुलझाने होती है तो हम अपने आप से पूछते हैं कि ''हमें क्या बनना चाहिए।''

इसलिए यह संचलन प्रवृत्तियों और मूल्यों में परिवर्तन लाने पर दृढ़ विश्वास करता है और यही इसका मुख्य उद्देश्य है कि हम अपने सदस्य एवं छात्र जगत में इस प्रकार का परिवर्तन ला सकें। यह कार्य पाठशाला, परिवार और पड़ोस के मामलों द्वारा करना है। नेतृत्व का प्रशिक्षण जो कि यह संचलन अपने सदस्यों को कार्य द्वारा देना चाहता है किसी हद तक छात्र जगत पर प्रभाव डालेगा।

जब हम इसके लक्ष्य पर विचार करते हैं, तब हमें अपने बालक–बालिकाओं के

विभिन्न समूह को उनके वयस्क होने की अवस्था के अंतर को ध्यान में रखना चाहिए कुछ अपने अभिप्राय में बहुत ही सीमित हो सकते हैं; जबकि दूसरे विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र के लोग अधिक उपलब्धि की क्षमता रखेंगे। इसी प्रकार संचलन के सामान्य दल के उद्देश्य की तुलना में अमुक क्षेत्र के किसी विशेष दल का ध्येय सीमित होगा। इसलिए संचलन के हर विभाग की जिम्मेदारी हो जाती है कि अनुप्राणदाता की सहायता से इसके हर विषय को अधिकाधिक समझने का प्रयास करें।

तीसरी राष्ट्रीय सभा में यु .खी. छा./यु.छा.सं के निम्न शब्दों में इस आंदोलन का ध्येय स्पष्ट किया गया है–

- ♣ व्यक्तित्व के विकास की ओर विशेष ध्यान, नेतृत्व का प्रशिक्षण, प्रत्येक विद्यार्थी का संपूर्ण विकास, सबकी भलाई और कल्याण का निरंतर ध्यान।
- ♣ हमारी मनोवृत्ति, मान्यताएं, आचरण और कर्मों पर निरंतर चिंतन, सार्थक कर्मों को प्रेरित करेगा; जिसके द्वारा हमारे धार्मिक विश्वास की अभिव्यक्ति होगी।
- ♣ दूसरों के प्रति अपनी दिलचस्पी प्रकट करने के सार्थक तरीकों का अपने जीवन में लगातार खोज करना चाहिए और समानता और न्याय के लिए अपनी रुचि पैदा करना।
- ♣ विद्यार्थी तथा समाज के अन्य सदस्यों में जागृति का आदान– प्रदान करना।
- ♣ सामाजिक परिवर्तन के कार्यों में लगे शक्तियों और संचलन के साथ मिलकर कार्य करने के लिए स्वयं को समर्पित करना।
- ♣ समाज में कार्य करनेवाली आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक शक्तियों का लगातार श्रमिक अध्ययन तथा उनका आलोचनात्मक विश्लेषण और परिवर्तन के लिए विभिन्न शक्तियों के विकास की संभावनाओं की खोज करना।
- ♣ एक मूल स्तर पर संबंध– यु .खी. छा./यु.छा.सं ग्रामीण क्षेत्रों और देशी भाषा भाषी समुदायों में अपने विचारों के प्रचार के लिए अधिक महत्व दें।
- ♣ अपने ही वातावरण में कार्य करने का निर्णय धैर्य और संस्कृति की शक्ति को साधन रूप में बदलने के लिए अपने आप को समर्पित करते हैं जिसके द्वारा मनुष्य स्वतंत्र हो सके।
- ♣ एक मनुष्य किसी व्यक्ति का सम्मान उसकी जाति, संस्कृति, आर्थिक स्थिति, राष्ट्रीयता, वंश, धार्मिक विश्वास पर ध्यान दिए बिना करें तो वह मनुष्य बड़ा महान होगा। प्रेम, समानता, अन्याय, अगुवाई, निर्णय में भागीदारी, रचनात्मकता आदि द्वारा हर व्यक्ति स्वतंत्रता पूर्वक अपने भाग्य का निर्णय कर सके।
- ♣ व्यक्तिगत स्पर्धा की मनोवृत्ति ने आज एक अमानवीय स्थिति पैदा कर दी है। हम इस मनोवृत्ति को बदलने,

सबके आदर और पसंद, गरीबों से मेल तथा सब के कल्याण के लिए अपने आप को समर्पित करते हैं।

lpyu dh ç—fr (characteristics)

यु.खी.छा./यु.छा.सं का वर्णन इन गुणों के आधार पर किया जा सकता हैः–

¼ v½ Nk= lpyu% यु.खी.छा./यु.छा.सं एक संगठन या कोई क्लब नहीं है जिसका एक निर्धारित विधान नियम और कार्यक्रम होता है। यह एक संचलन है। कह सकते हैं कि यह छात्र जगत के वातावरण में सजग और उसकी मौलिक आवश्यकताओं से प्रभावित इतिहास में एक क्रियाशील उपस्थिति है। विद्यार्थी की स्थिति या उसका वातावरण जिसे हम 'विद्यार्थी का जीवन' कहते हैं। शाला के चारदीवारी के अंदर का बंद वातावरण नहीं है; परंतु इसमें विधार्थी की मनोवृत्ति (अभिप्राय, अभिवृत्ति, मान्यताएं, परंपराएं) और बाहरी व्यवहार द्वारा उसकी अभिव्यक्ति शामिल है। यह अभिव्यक्ति भी उस ढंग से, जिस ढंग से पाठशाला और पड़ोस संगठित हुआ है। इस प्रकार इस संचलन का कार्यक्षेत्र पाठशाला की सीमा से ज्यादा बढ़ा हुआ होता है और उन युवाओं का सहयोग चाहता है जो वास्तव में स्कूल में नहीं होते हैं।

¼c½ ck/kxE; lpyu% यह युवकों के ज्ञान को और अधिक बढ़ाने में मदद करता है।

mudk Lo;a dk%

- ⇨ वे कौन है(संभावनाएं, आकांक्षाएं, जिम्मेदारियां)
- ⇨ वह किस प्रकार एक दूसरे से जुड़े हुए हैं (शाला, परिवार, पड़ोस)
- ⇨ कौन सी चीज उनको प्रेरणा देती है और उन पर बंधन लगाती है (मान्यताएं और परंपराएं)
- ⇨ परिवर्तन और वृद्धि का उन्हें क्या आवश्यकता है?

mudk okrkoj.k dk% एक खास ऐतिहासिक वातावरण जिसमें वे रहते हैं।

- ⇨ विद्यार्थियों और दूसरे युवा जनों में जो हो रही है।
- ⇨ मनोवृत्ति या और मान्यताएं जो उनमें प्रचलित है।
- ⇨ शक्तियां जो उनके समाज में कार्यशील है।

mudk ,frgkfld fLFkfr dk% उनके निर्णय की आज की भावनाओं और रुचि का भावी परिणाम पर प्रभाव। वे सतर्क हैं, वे जानते हैं कि भारत का भाग्य उनके कक्षा कमरों में अब बनाया जा रहा है।

¼l½ dk;Z ij vkèkkfjr lpyu% वास्तव में यह जानकारी पैदा करने वाला संचलन है। यह भी नहीं भूलना चाहिए कि यह 'गतिशीलता' पर स्थापित किया गया आंदोलन है। इसकी जानकारी का आलोचनात्मक विश्लेषण किया जाए और उसे एक सचेतन और प्रत्यक्ष कार्य की ओर ले जाया जाए। उसे विद्यार्थियों के कार्यक्षेत्र एवं उनके सामर्थ्य तक पहुंचाया जाए। पर यदि यह कार्य परिवर्तन लाने में प्रभाव कार्य सिद्ध नहीं होता तो भी यह प्रयास एक रचनात्मक महत्व रखता है, कारण कि इसके सदस्यों की मनोवृत्ति स्वयं बदलने लगती है और साथ ही साथ अपने उन साथियों

की भी जिनको यह अपना ज्ञान देते हैं और जिनके साथ कार्य में हाथ बटाते है।

¼M½ èkeZ l çfjr% शुरु में यह संचलन यूरोप में पूर्ण रूप से ख्रीस्तीय विद्यार्थियों के लिए था। भारत में भी इसके शुरू के अधिकांश सदस्य ख्रीस्तीय थे। परंतु बहुत समय बीतने से पहले हमारी ख्रीस्तीय पाठशालाओं की तरह इस आंदोलन ने गैर ख्रीस्तीय शालाओं का भी ध्यान अपनी और आकर्षित किया और बाद में यह महसूस किया कि जब तक विभिन्न धर्मों में लड़के–लड़कियां इसमें शामिल नहीं होतें तब तक इसके तत्वों को पूरी तरह नहीं समझा जा सकता।

अभी भी इसमें ख्रीस्त से प्रेरित मान्यताओं की ही झलक अधिक पड़ती है। हम यह महसूस करते हैं और साथ ही साथ यह आग्रह भी करते हैं कि विभिन्न धर्मों को मानने वाले हमारे सदस्य अपनी धार्मिक परंपराओं, प्रेरणाओं, धार्मिक रीति–रिवाजों, व्यवहार में लाने वाले तौर तरीकों का योगदान करें ताकि यह आंदोलन अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकें।

'युवा छात्र संचलन' यह जानता है कि कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जिनके आपसी दृष्टिकोण में काफी अंतर होते हैं और कभी–कभी संघर्ष हो जाता है। परंतु हमें निश्चित रूप से उसका आदर करना है और उनको वह जैसे हैं उसी रूप में स्वीकार करना है ताकि सब एक साथ भाई बहन की तरह मिलकर काम में जुट जाए। परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि जीवन के धार्मिक पहलुओं को छोड़ ही दिया जाए। यु. छ. सं. विद्यार्थियों का इसी आधार और प्रयोजन के लिए जीवन का चिंतन करने के लिए नेतृत्व करेगा और धर्म की संबद्धता की खोज करेगा। पर यह सब दूसरे धर्मों और उसकी मान्यताओं का आदर करते हुए होगा ताकि राष्ट्रीय एकता बनाए रख सकें।

(जॉन डरोशियस एस. सी.)

¼Ã½ Vkfy;ks ij vkèkkfjr%– यह संचलन छोटे–छोटे दलों में काम करने के सिद्धांत पर आधारित है। एक दल में 8 से 10 लोग होते हैं। इस प्रकार के छोटे–छोटे दलों में काम करने में बहुत से लाभ है।

,d NksVk ny%

- ⇨ एक युवा व्यक्ति को व्यक्ति होने का अवसर देता है।
- ⇨ ऐसे वातावरण का निर्माण करता है जिसमें व्यक्ति यह अनुभव करता है कि वह स्वीकृत है।

- ➪ एक व्यक्ति को उसके स्वयं की प्रतिभा तथा कमजोरियों की खोज करने में मदद करता है।
- ➪ एक व्यक्ति को स्वयं आरंभ करने की शक्ति प्राप्त करने, जिम्मेदारियों के साथ बढ़ने तथा नेतृत्व करने की योग्यता का विकास करने का निमंत्रण देता है।
- ➪ वह युवा व्यक्ति को अपना व्यक्तित्व बनाने अपनी मान्यताओं की खोज करने और उन्हें मज़बूत बनाने तथा दूसरों से संबंध स्थापित करने के लिए अवसर देता है।
- ➪ एक व्यक्ति को व्यवधानों द्वारा मतभेद और खुद अपने ही और झुकाव को दूर करने के लिए प्रोत्साहित करता है जो वास्तव में सबकी भलाई से संबंधित है।

एक दल तभी जीवित और प्रभावशाली बन सकता है जब उसमे नीचे बताई गई बातें हो।

१. दल और उसके सदस्यों में एक दृढ़ विश्वास। यह दूसरों को कुछ बताने और उनकी बातों को सुनने की उत्सुकता पैदा करता है। बोली की अपेक्षा किसी व्यक्ति को अधिक सुनना लाभप्रद है। दल में जो कुछ भी अन्य सदस्य कहते हैं उस सच्चाई का आदर करना साथ ही उदारता तथा लगन के मनोवृति का होना आवश्यक है।
२. दल के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझना और इसमें सक्रिय भाग लेना तथा उससे संबद्ध होना।

संचलन की संरचना (structure)

ny@Vkyh **Cell :** हर दल में 8–10 छात्र हो सकते है। दल में एक लीडर और सचिव का होना जरूरी है

bdkbZ@ **Unit :**सभी दलों को मिलाकर इकाई बनती है। इकाई में अध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष और रिपोर्टर होते है।

/kekZiz@**Diocese:** सभी ईकाइयों को मिलाकर धर्मप्रांत बनता है। (DTA/DTS-DEXCO)

{ks=@**Region :**एक क्षेत्र के सभी धर्मप्रांत मिलकर क्षेत्रीय टीम बनता है।(RTA/RTS-REXCO)

jk"Vª@**Nation :**राष्ट्रीय टीम (NTA/Exco-NEXCO)

राष्ट्रीय अनुप्राण्दाता, संयोजक, अध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष

National Chaplain, Coordinator, President, Secretary,Treasurer

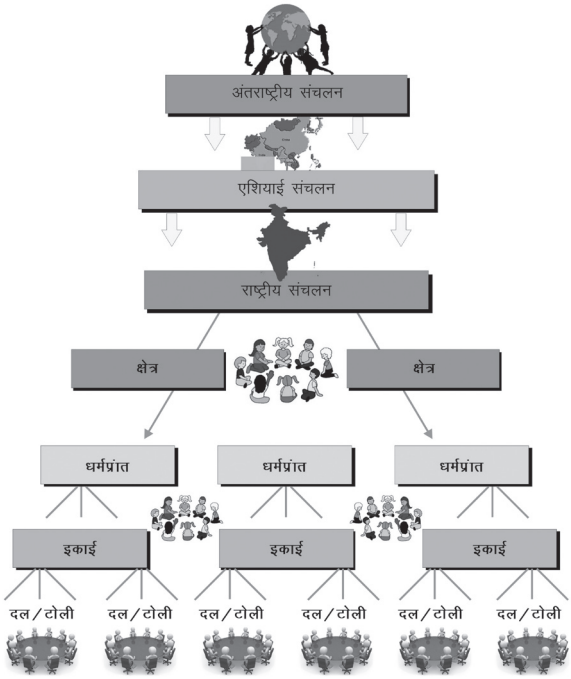

राष्ट्रीय कार्यालय : दिल्ली

राष्ट्रीय पंजीकृत कार्यालस : चेन्नई, तमिलनाडु

jk"Vª@**Asia :** ऐशियाई टीम, कार्यालय : मनीला, फिलिपीन्स

vUrjkZ"Vªh;@**International:** अंतर्राष्ट्रीय टीम, कार्यालय : पेरिस, फ्रन्स

Nk= l|pyu: यु.खी.छा./यु.छा.सं एक छात्र संचलन है। छात्र विभिन्न स्तरों अपने अनुप्राणदाताओं से परामर्ष करके (दल, इकाई, धर्मप्रांत, क्षेत्र, और राष्ट्र) नेतृत्व लेते है और निर्णय लेने के मामले में जिम्मेदारी लेते हैं।

jk"Vh; ifj"kn %यह संचलन का उच्चतम विधायी निकाय है, जिसमें सभी धर्मप्रांत के छात्र नेता शामिल होते हैं। यह संचलन का मूल्यांकन करने और आने वाले तीन वर्षों के लिए एक विषय को विकसित करने के लिए तीन साल में एक बार मिलता है। अब तक हमारी स़त्रह ऐसी परिषदें हो चुकी हैं।

jk"Vh; dk;|dkjh: (NEXCO) राष्ट्रीय कार्यकारी (नेक्स्को) में प्रत्येक क्षेत्र से दो या अधिक छात्र नेता (लड़का और लड़की) शामिल होते हैं। वे राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और धर्मप्रांतीय निकायों के बीच एक कड़ी बनते हैं और राष्ट्रीय योजनाओं और कार्यक्रमों को चलाने में मदद करते हैं।

jk"Vh; vu|ik.knkrk **(NTA): NTA** में राष्ट्रीय अनुप्राणदाता (नेशनल चैप्लैन), राष्ट्रीय संयोजक और क्षेत्रीय अनुप्राणदाता शामिल हैं। **NTA** और **EXCO** संचलन का मूल्यांकन करने के लिए, योजना बनाने और राष्ट्रीय स्तर पर कार्यक्रमों को लागू करने के लिए छह महीने में एक बार मिलते हैं।

jk"Vh; Vhe **NT** % में राष्ट्रीय संयोजक/अध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष के साथ–साथ राष्ट्रीय अनुप्राणदाता और समन्वयक शामिल हैं। इन नेताओं को राष्ट्रीय कार्यकारी (नेक्स्को) निकाय से लोकतांत्रिक तरीके से चुना जाता है। यह संचलन का प्रशासनिक निकाय है।

{k= **(REXCO):** वर्तमान में भारत में 14 क्षेत्र हैं। क्षेत्रीय टीम **(RT)** में क्षेत्रीय अनुप्राणदाता, समन्वयक, संयोजक, सचिव और कोषाध्यक्ष शामिल होते हैं। क्षेत्रीय स्थर पर अनुप्राण्दाताओं की क्षेत्रीय टीम **(RTA)** और छात्रों की क्षेत्रीय टीम **(RTS)** हैं।

/ke|ikr **(DEXCO)** % धर्मप्रांत में हमारे पास अनुप्रणदाताओं की धर्मप्रांतीय टीम **(DTA)** और धर्मप्रांतीय छात्रों की टीम **(DTS)** होती है। यह चर्चा करने, मूल्यांकन करने और यंचलन को मजबूत करने के लिए है। **NT** और **RT** की तरह, यहाँ हमारे पास क्ज (**Diocesan Team, DEXCO**) प्रशासनिक निकाय है।

ny% 8 से 10 की संख्या में विद्यार्थी संचलन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए एक साथ मिलकर कार्य करते हैं वही मिलकर एक दल का गठन कर सकते हैं। दल ही इस संचलन के आधार को बनाता है। दल को अपनी प्राप्ति एक वर्ग में या मंडल में खोजनी चाहिए पर जहां इन दोनों का अस्तित्व नहीं है तो संभागीय स्तर पर।

jk"Vh; lEe|yu: राष्ट्रीय सम्मेलन तीन वर्षों में एक बार आयोजित किया जाता है जहां अधिक भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य वास्तविकता की वर्तमान स्थितियों का अध्ययन करना है।

किशोरों के लिए क्यों यु.ख्री.छा./यु.छा.सं ?

Hkkjrh; Nk= vkj lpyu

इस संचलन को समझने के लिए और इस समय देश के लिए इसके लक्ष्यों को जानने के लिए इसके प्रतिस्थापन और उद्देश्यों को समझने के लिए हमें पहले उस युवा पीढी के जो इस संचलन से संबधित हैं, गुणों एवं वातावरण का अध्ययन करना आवश्यक है।

¼v½ gekjs ckyd ckfydk;sa % जो बालक बालिकायें इस संचलन में सम्मिलित होते हैं उनके बारे में पर्याप्त रूप से वर्णन करना इस छोटी सी पुस्तिका में असंभव है।
अनुप्राणदाता का व्यक्तिगत अनुभव ही ज्ञान का सब से अच्छा साधन होता है। अतः हम यहाँ उस उम्र के बालक बालिकाओं के मनोवैज्ञानिक लक्षणों गुणों का वर्णन करने और इस युवा कार्य को करने के संदर्भ में उनकी जो बुनियादी आवश्यकताएँ हैं उन्हें प्रस्तुत करेंगे।

¼vk½ dqN lkekU; euksoKkfud fo'k"krk,a % हमारे सामने युवावस्था के बालक बालिकायें होते हैं। अनुप्राणदाता को सलाहा दी जाती है कि इस उमर के बालक बालिकाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करें। इसके लिए अच्छे लेखकों द्वारा लिखी गई पुस्तकें पढें। आगे जो विचार दिए गए हैं वे एलिजबेथ बी. हरलोक की पुस्तक से लिए गए हैं।

¼b½ ckY;koLFkk % बारह वर्ष से पूर्व की छोटी आयु से बालक बुनियादी रूप से मिलनसार बनना सीखता है। अपने परिवार को पूरी तरह सहयोग देना और आस पडोस के बालकों के साथ मिलजुलकर रहना और खेलना, अध्यापकों को खुश रखना, पाठशाला के कार्यक्रमों में अधिक से अधिक भाग लेना आदि। वही बालक अधिक सफल कहलाता है जो वयस्कों के अनुरूप चलना सीख जाता है। 6 से 12 वर्ष की सुप्त अवस्था में बालक में मूल प्रवृत्तियों की शक्ति शान्त सी प्रतीत होती है। इस तरह बालक के उपद्रवी बनने की कम संभावना रहती है। इस आयु में शारीरिक विकास भी नियमित होता है। ऐसा जान पडता है कि बालक की शक्ति उसके विकास में खर्च हो रही है। विशेष कर बौद्विक और सामाजिक क्षेत्र में।

सामान्य रूप से देखा गया है कि आठ वर्ष के बाद बालक बालिकाओं के साथ तथा बालिकायें बालकों के साथ खेल कूद तथा मेल जोल पसंद नहीं करते हैं। यह प्रवृत्ति विशेष कर लडकों में पाई जाति है और ऐसा प्रतीत होता है कि वह अपने लडके

होने का पहचान कराने और स्वयं को लडकियों से महत्वपूर्ण दिखाने का प्रयत्न करते है। दल के साथ अधिकाधिक रहने की इच्छा व परिवार से स्वतंत्रता की आकांक्षा किशोरवस्था के विशेष गुण है।

fd'kkjoLFkk % शरीर में होनेवाले परिवर्तन लडके–लडकियों का परस्पर व्यवहार बालक–पालक का सम्बन्ध एवं सामाजिक प्रतिष्ठा द्वारा यौवनावस्था प्रकट होती है। कभी कभी इस शारीरिक परिवर्तन एवं शीघ्र विकास के कारण थकावट, असावधानी आदि लक्षण बालक में देखे जा सकते हैं जो उसमें भीरूता, चिडचिडापन या भावुकता के लक्षण पैदा कर देते है। इन लक्षणों का सामान्य परिणाम बालक बालिकाओं के आचरण पर पडता है। युवकों की अपेक्षा युवतियों पर इसका प्रभाव अधिक पडता है। क्योकि युवतियाँ युवकों की अपेक्षा जल्दी परिपक्व हो जाती है। इसके अतिरिक्त उनके आचार विचार पर सामाजिक बंधन अधिक मात्रा में होते है।

समय के अनुसार वयस्क होना और समय से पहले वयस्क होना, बालक और बालिकाओं दोनो में पाया जाता है। समय से पहले वयस्क हो जाना लडकियों की अपेक्षा लडकों के लिए अधिक लाभकारी हो सकता है, विशेष कर खेल कूद के क्षेत्र में। अधिकतर देखा जाता है कि अधिकांश नेता इन जल्दी वयस्क होने वाले लडकों की श्रेणी में से ही बनते हैं। लेकिन जल्दी वयस्क होना लडकियों के लिए कम लाभप्रद है। जल्दी पारिपक्व होने से इनके आचार विचार में बनावट आ जाती है। वे बडों जैसा व्यवहार करने लगती है और इस प्रकार अच्छी नहीं लगती। लडकों की तुलना में ये लडकियाँ लोगों की नजरों में ज्यादा आना चाहती है और इस प्रकार वे एक सामाजिक समस्या बन जाती है। देर से परिपक्व व वयस्क बनने वाले बेचैन, चंचल, खिंचे खिंचे से तनावपुर्ण तथा विरोधी प्रवृत्ति के होते हैं। दूसरी ओर देर से वयस्क होने वाली लडकियों की कोई समस्या नहीं होती परन्तु इस हालत में व्यवहार में भी फर्क पड़ जाता है।

इन परिवर्तनों के कुछ सामान्य प्रभाव दिए जा रहे हैं जो बालक बालिकाओं के व्यवहार और प्रवृत्तियों पर पड़ते हैं।

vdyiu dh bPNk % किशोरावस्था की समूह में रहने की प्रवृत्ति में परिवर्तन आ जाता है। बालक अपने मित्रों में अधिक रूचि नहीं लेते। वह उनसे दूर हो जाते हैं और अकेले बन्द कमरे में अपना समय बिताते है। यह अकेलेपन की प्रवृत्ति कभी कभी पुराने दोस्तों के साथ झगडा कराकर उनकी दोस्ती भी तोड देती है।

dk;l d ifr mnklhurk% यह आलस्य जानबूझकर नहीं होता और बौद्विक स्तर के परिवर्तन के कारण ही होता है। परन्तु प्रत्यक्ष रूप से अतिवृद्वि तथा विकास के कारण होता है जो उसकी सारी शक्ति को चूस लेता है। अतः जब लडके लडकियों पर ऐसी हालत में आलसीपन या लापरवाही के दोश लगाए जाते हैं तब उनमें विरोधी भावनाएँ जड़ पकडने लगती हैं और हम जितने काम की आशा करते हैं वे उससे कम काम करते हैं।

vkilh ey tky dk vHkko% जब बालक तीव्र गति से बढ़ता है पर उसकी तुलना में उसकी स्नायु में उसकी माँसपेशियों में कुशलता एवं प्रवीणता नहीं आती विशेष कर बचपन में।

uhjlrk% जब बालक में ऐसी प्रवृत्ति उसके खेल, शाला कार्य, सामाजिक कार्य तथा सामान्य जीवन में पाई जाती है और जब उसे इसके लिए झिडकाया जाता है या डाँटा जाता है तो ''मैं किसी की परवाह नहीं करता'' ऐसी भावना उसमें आ जाती है और बालक चिडचिडा एवं हठीला बन जाता है।

cpuh % क्योकि मनोरंजन के पुराने विषय तथा साधन अब अच्छे नहीं लगते और नए विषयों की खोज नहीं होती है। ऐसी स्थिति में बालक एक वस्तु से दूसरी की ओर भागता रहता है लेकिन किसी भी वस्तु से उसे पूर्ण संतोष नहीं मिलता। वयस्क होने वाला बालक बडी मुश्किल से एक स्थान पर एक ही स्थिति में अधिक समय तक रह पाता है।

lkekftd fojk/k % कंधे पर थाप देते हुए चेहरे पर गुर्राहट लिए वह अपने रास्ते से दूर हटकर भी दूसरों का मज़ा, किरकिरा करने और उनका खेल बिगाडने के लिए जाता है। वह अधिक से अधिक असहयोगी एवं दूसरों का अप्रिय बनने का प्रयास करता है। घर में दूसरों से ईर्ष्या रखना, उनकी आलोचना करना, गाली बकना तथा घर की चीजों पर हाथ साफ करना। घर में माँ अधिकतर उसकी आलोचना का विषय बन जाती है।

vf/kdkfj;k d fy, ck/kk% बच्चे विशेषकर माता–पिता के अधिकार में बाधा डालते हैं जो बच्चे बुरे आचरण और व्यवहार वाले पाए जाते हैं उनमें ये अधिकांश इसी श्रेणि से आते हैं। वैसे यह उतना गंभीर नहीं है। लेकिन कई बार ऐसे बालक जानबूझकर दूसरों को क्रुद्ध करने या उन्हें चिढ़ाना चाहता है। कानाफूसी तथा असावधानी, लापरवाही, बकवास, क्रोध करना शंकापूपन, गतिहीनता, आज्ञा न मानना, धृष्टता, बंधन में न रहना, अपने आपको सब कुछ समझना, अन्य लिंग से दूर रहना आदि अवगुण इस उमर के बुरे आचरण वाले बालकों में कई बार देखे गये हैं।

fyx tkfr fojkf/k iofRr% यह एक ऐसी प्रवृत्ति है कि वे प्रत्यक्ष रुप से दूसरे की आलोचना करते हैं। कभी कभी यह आलोचना अपमानजनक टिप्पणियों द्वारा होती है। प्रौढ़ व्यक्ति तक तो इस प्रवृत्ति से अछूते नहीं रहे। लडकों की अपेक्षा लडकियाँ अधिक अपराधि, अधिक कष्टदायक होती हैं।

rho lonu'khyrk % उदासीनता, उद्विगनता तथा थोड़ा सा उत्तेजित होने पर बिलख पड़ने की प्रवृत्ति लड़कों में अधिक पाई जाती है। कुछ अधःमूर्छा जैसी स्थिति में होने की प्रवृत्ति लड़कियों में सामान्य रूप से पाई जाती है, जब वे क्रोधवश या ईर्ष्यावष, खिन्न अवस्था में, शांत, चुपचाप जगह में हों जो शाला पूर्व के दिनों की याद दिलाती है। यौवनारंभ का काल, चिंता तथा काल्पनिक भय का काल होता है। लड़के अपने व्यक्तिगत एवं सामाजिक योग्यता की एवं लड़कियाँ अपने घर तथा शाला कार्य की अधिक चिंता करती है

बाल्यकाल के समाप्ति समय में जिस अभाव की अनुभूति होती है उस अभाव से यह भिन्न है। कभी–कभी दिल विद्रोह की आड़ में यह पाया जाता है।

vkRefo'okl dh deh % यह अभाव कभी–कभी बाल अपराधों की ओर मोड़ता है। अपने अहम को बढ़ावा देने के लिए वह गलत कार्य करता है। हालांकि वह जानता है कि वह गलती कर रहा है और अधिकारियों से बुराई मोल ले रहा है। कुछ लड़के और लड़कियां यौन अवस्था को पार कर जाते हैं पर उनमें आत्मविश्वास की इतनी कमी होती है कि उसे फिर प्रौढ़ावस्था में पूरा करना बड़ी जटिल समस्या बन जाती है, जिसका उनको सामना करना पड़ता है। सबसे अधिक हानि उनकी होती है जो पहले से ही आत्मविश्वासी दिखते थे पर उनसे और अधिक की आशा की जाती है।

ylfxd rUe;rk % गर्भावस्था या बच्चे के जन्म के समय नहीं परंतु स्वयं लैंगिक जीवन में बनती है। इस तल्लीनता के लक्षण है अपने शरीर के विभिन्न अंगों का ध्यान पूर्वक अध्ययन करना, विभिन्न प्रकार के हास्य कार्य करना और फिर जननेंद्रियों को उत्तेजित कर देखना की कौन–कौन सी नई उत्तेजना पैदा की जा सकती हैं। अपने ही लिंग के दूसरे व्यक्ति के शरीर के विभिन्न अंगों की आकृति रूप को

ध्यानपूर्वक देखना, फिर अपने शरीर के अंगों से तुलना करना, यौन संबंधी पुस्तकें पढ़ना, शब्दकोष में अर्थ खोजना, अश्लील चित्रों को देखना और भद्धे (यौन संबंधी) चुटकुले सुनना और इनके द्वारा इस संबंध में और अधिक ज्ञान प्राप्त करना आदी।

vR;fèkd yTtk % विशेषकर के कपड़े पहनते या बदलते समय दिखाई जाती है। यौनावस्था में वह बड़े सतर्क रहते हैं। उन्हें डर सा लगा रहता है कि कोई उनकी शारीरक बदलाहट पर टीका टिप्पणी न दे।

fnok&LoIu ¼èkqu½ % सामान्य रुप से वही, जिसे कि माता पिता, शिक्षकों, मित्रों अथवा समाज ने गलत समझा या उनके साथ गलत व्यवहार किया है एक ''पीड़ित नायक'' हो जाता है और एकाएक वही ''धुनी'' (व्यर्थ की चिंता करनेवाला) बन जाता है। ऐसे बालक का समाज में बहुत कम समाधान हो पाता है।

lkekftd lekèkku dk {k= esa % समवयस्कों का, किशोर समुदाय के दृष्टिकोण, रुचि, मूल्य तथा व्यवहार पर अधिक प्रभाव होता है, विशेषकर शहरी क्षेत्र के परिवारों में। इस तरह मित्र मंडली, ''भीड़'', संगठित दल और अन्य लिंग के व्यक्तित्व में रुचि आदि सभी तत्व उनके भविष्य के पथ का निर्माण करते हैं। समय से पूर्व युवा हो जाने वाली अवस्था में विषेशकर लड़कों में अन्य लिंग के प्रति घृणा का भाव रहता है। इस उम्र में वह अपना प्रेम (भय) अपनी ही जाति के किसी बड़े व्यक्ति पर केंद्रित करते हैं। वह उसी को निहारते हैं जिसमें कुछ योग्यता होती है। इसके बाद उनका यह प्रेम अन्य लिंग के व्यक्ति से होता है जो स्पष्ट रूप से उन से बड़ा होता है। यही कोई पंद्रह–सोलह वर्ष की उम्र में लड़के और लड़कियाँ एक साथ समूहों में मिल जाते हैं।

यह सामान्य गुण थोड़े बहुत अंतर के साथ सारे संसार में पाए जाते हैं। इस तरह जब हम भारत की युवा पीढ़ी पर विचार करते हैं तो हमें यह समझना चाहिए कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक विभिन्नता के कारण उनमें भी अंतर होता है। उदाहरण के लिए, शहर में रहने वाले अंग्रेजी बोलने वाले युवा वर्ग की रूचि, आचार विचार और दृष्टिकोण में मातृभाषा बोलनेवाले युवकों से काफी अंतर दिखाई देता है। वह शिक्षित युवक आसपास की आम जनता के साथ अपने विचारों, भावनाओं तथा दृष्टिकोणों का प्रभाव पूर्ण ढ़ंग से आदान प्रदान करने में अपने को असमर्थ पाते हैं। अंग्रेजी बोलने वाले लड़के और लड़कियां जिस बड़े समाज में रहते हैं उसी से विमुखता उसी के प्रति अपना अज्ञान जाहिर करते हैं। कहने का अर्थ यह है कि वह अपने आप को कुछ अलग ही मानते हैं जैसे उनकी रुचि खेलकूद सांस्कृतिक कार्यक्रम इत्यादि देसी भाषा बोलने वाले युवा वर्ग को समाज की समस्याओं का ज्यादा ज्ञान होता है और उन्हें इस समस्याओं के निराकरण के लिए सहायता देने की अभिलाषा होती है ।

युवा कैथोलिक छात्र/युवा छात्र संचलन, किशोर लड़के और लड़कियों को इन आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति करने का अवसर प्रदान करता है। समूह में काम करने की पद्धति उन्हें 'समकक्ष समुदाय' को बनाने में सहायक होगी। संचलन की

आध्यात्मिकता एवं जीवन का पुनः अवलोकन अध्वानात्मक आदर्श प्रस्तुत करता है। रचनात्मक कार्यों के लिए विस्तृत क्षेत्र एवं साधन है, जिसमें कार्य द्वारा सहभागिता एवं उत्पादकता लाई जा सकती है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि भारत में इतने कम बरसों में इस संचलन ने अनेक वयस्क तैयार तैयार किए हैं, जिन्होंने इसके उद्देश्य एवं अध्ययन की पूर्ति के लिए अपने आप को समर्पित कर दिया है।

युवाओं को किशोरावस्था में सबसे ज्यादा मार्गदर्शन की ज़रूरत है। युवा कैथोलिक छात्र/युवा छात्र संचलन की कार्य प्रणली के द्वारा हम दलों और इकाईयों में इन युवाओं को सही पथ पर चलने के लिए मदद कर सकते है तथा नये समाज की स्थापना में युवाओं को आगे बडा सकते है।

"दुनियाँ में दो तरह के लोग होते है एक वो जो दुनियाँ के अनुसार खुद को बदल लेते है और दूसरे वो जो खुद के अनुसार दुनियाँ को बदल देते है।"

प्रशिक्षण- कार्यक्रम

यु. खी. छा./यु. छा. सं. के प्रशिक्षण का आधार विद्यार्थियों का जीवन है। जो उल्लास , चिंताओं, सफलताओं, प्रश्नों और खोजों में भरा हुआ होता है। जब अनुप्राणदाता विद्यार्थी से संपर्क स्थापित करता है, तब वह उनकी समस्याओं पर तर्क वितर्क करता तथा उनकी सहायता करता है कि वह इन समस्याओं का अपने जीवन में हर कर लें। अतः जो प्रशिक्षण दिए जाते हैं उनके कुछ निश्चित कार्य इस संचलन मे बड़े महत्वपूर्ण होते हैं। वह है, बैठकें सहचर्य दिवस, अध्यापन दिवस, नेताओं का प्रशिक्षण शिविर, सामाजिक कार्य शिविर आदि। हम इन पर कुछ विस्तारपूर्वक विचार करेंगे और उनको प्रभावपूर्वक ढंग से कार्य करने के लिए कुछ सुझाव भी देंगे।

cBd%& यु. खी. छा./यु.छा.सं. में अनेक प्रकार की बैठकें होती हैं। कुछ लोगों को इनके प्रति शिकायत करते है। इसमें शक नहीं है कि बैठकों के समय कार्य से छुट्टी मिल जाती है, पर यह बैठकें भी तो जरूरी है। यह कभी–कभी बड़ी फलदायक होती है। एक वास्तविक दल के लिए लगातार परस्पर संबंध बनाए रखना बहुत जरूरी है और इसके लिए 'बैठक' की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। हर बैठक का रूप उनके उद्देश्य पर निर्भर होता है। उसके कुछ नमूने दिए जा रहे हैं।

thou dk iufoykdu%& चूंकी यु.खी.छा./यु.छा.सं. मौलिक रूप से कार्य पर स्थापित संचलन है। इसलिए इसके सदस्य अपने अवलोकन तथा खोजों में भागीदारी करने तथा उन्हें अपने जीवन में आत्मसात कर लेने के लिए नियमित रूप से परस्पर मिलते रहते हैं। इस प्रकार की बैठक स्वाभाविक रूप से इस निर्णय के साथ किसी कार्य को व्यक्तिगत, सामूहिक या किसी की मदद द्वारा पूरा करती है। इसके बाद अपने कार्य का अवलोकन करने तथा भविष्य के कार्यक्रम की योजना बनाने के लिए

पुनः मिलते हैं। सदस्यों तथा अनुप्राणदाता को मिलकर इन बैठकों की नियमितता का निर्णय आपसी संबंध की आवश्यकता, समय, स्थान तथा यातायात की सुविधाओं को ध्यान में रखकर ही करना चाहिए।

l= ;kstuk%& यद्यपि यह योजना भी जीवन के पुनरवलोकन से संबंधित है फिर भी इसके सदस्यों को इस से संबंधित व्यवहारिक योजना बनाने का न्योता दिया जाता है।

urkvk dh cBd%& विभिन्न वर्ग के नेता किसी खास जिले में नियमित रूप से (महीने में एक बार) अपने अनुभवों को बताने, सामान्य कार्यों की योजना बनाने का नेतृत्व करने के प्रशिक्षण को प्राप्त करने के लिए मिलते हैं। इस प्रकार की बैठकें नेताओं के प्रशिक्षण तथा आंदोलन की सफलता के लिए महत्वपूर्ण है। ऐसी सलाह दी जाती है कि उपरोक्त बातों को छोड़ नेतृत्व शिविरों में चर्चा किए गए विषय पर ध्यान दिया जाए।

cBdk dk eY;kdu%& हमारी सफलताओं तथा विफलताओं पर, जिनकी हमने वृद्धि की है उन पर चिंतन करने के लिए इस प्रकार की बैठकों का आयोजन किया जाता है। इस प्रकार एक दल को स्वयं की स्थिति संबंधों तथा कार्य कलापों का पुनर्विलोकन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है सदस्यों को निम्नलिखित बातों पर अपने आप से प्रश्न करना चाहिएः–

- ❖ बैठकों की नियमितता तथा समय की पाबंदी।
- ❖ दल के नेता तथा सदस्यों द्वारा बैठक की पूर्व तैयारी।
- ❖ बैठकों के परिणाम (योजना में नहीं पर कार्यों में)।
- ❖ बैठकों की गतिविधियाँ ; सहयोग प्रधान नेतृत्व।
- ❖ अनुप्राणदाता की भूमिका तथा उसका सहयोग।
- ❖ दल का मनोबल तथा उसकी कमजोरियाँ दूसरों के साथ उनका संबंध एवं प्रभाव।

cBdk d fy, ekxn'ku%& दूसरी अन्य बातों के साथ ही साथ नेता और दल के सदस्यों द्वारा की गई पूर्व तैयारी पर ही बैठक की सफलता निर्भर है। अनुप्राणदाता बहुत कम बोलता है तथा दल का नेता अधिक सक्रिय रहता है। दल का नेता इस तरह से सामने आए कि अनुप्राणदाता को कम बोलना और समझना पड़े। दल के नेता तथा सदस्यों द्वारा अपूर्ण तैयारी की स्थिति में अनुप्राणदाता उन्हें बता सकता है कि–

(क) बैठक की सफलता की जिम्मेदारी संपूर्ण दल पर है ना कि अकेले दलनायक या अनुप्राणदाता पर, इसलिए निष्क्रिय मत बनो।

(ख) हर एक के अनुभव और विचारों को ध्यान से सुनो और उनका आदर करो जब कोई सदस्य बोलता है तो उसे ध्यान से सुनो और वास्तव में जो कुछ वह नहीं बोलता है उसे भी समझने का प्रयास करो।

(ग) हर एक की विलक्षणता तथा व्यक्तित्व को स्वीकार करो। व्यंग्य पूर्ण हँसी, व्यक्ति तथा उनके विचार को तिरस्कार का रूप दे सकती है। इससे सावधान रहें।

(च) बोलते समय अपनी बात संक्षेप में कहो; भाषण मत दो। दूसरे सदस्यों को बोलने का मौका दो।

(ड) जो बातें दल से संबंधित है उसे दल तक ही सीमित रखो उन बातों को बाहर मत बताओ।

ny uk;d dk ;g le> yuk pkfg, fd mldh ftEenkfj;k g fd og%

- स्वतंत्र विचारों की वृद्धि करने दे ना कि अपने ही विचार ठोक दे।
- हर सदस्य को उनके अनुभव तथा विचार प्रकट करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- हर सदस्य में समझदारी एवं विश्वास पैदा करें।
- सदस्यों के विश्वास और मनोवृत्तियों के अनुसार ही कार्य में वृद्धि करें।
- दल के हर एक सदस्य की व्यक्तिगत जिम्मेदारियों तथा नेतृत्व करने की क्षमता का विकास करें।

bldk fy, ny uk;d dk pkfg, fd&

अ– वह बैठक में स्वयं की सफलता की इच्छा ना करें।

आ– वह अपने सम्मान के लिए पक्षपातपूर्ण निर्णय तथा उत्तेजना को स्थान न दें।

ई– वह उत्तेजनापूर्वक वाद विवादों में अपने आप को सम्मिलित ना करें।

ई– वह दल के साथ बराबरी का संबंध रख कर उसके कार्यों का पुनर्विलोकन करें।

dN rjhd%& एक बैठक को या सत्र को आरंभ करने का सबसे अच्छा तरीका यह है की कुछ अच्छे प्रश्नों से शुरू की जाए। इससे समय की काफी बचत होती है। किंतु जब बार–बार इसी तरीके को अपनाया जाता है तब कभी–कभी यह नीरस बन जाता है और प्रभावशाली नहीं होता। अपने अनुभवों के आधार पर कोई दूसरी विधि, प्रयोग में लाई जा सकती है कि हम और अधिक गहराई से अपने कार्य पर पुनर्विचार कर सके तथा अपने विचारों का आदान प्रदान कर सके। पहले अपने निर्धारित विषय पर प्रश्नोत्तर से शुरू किया जा सकता है, फिर कुछ क्षण शांति पूर्वक विचार करने के बाद उत्तरों का अन्य विषयों से संबंध जोड़ने के लिए लेख लिखवाया जा सकता है । यह विधि उन सदस्यों को अधिक लाभ पहुंचाती है जो दल में बोलने में रुचि नहीं रखते शर्माते अथवा हिचकिचाते है।

संचलन की शुरूआत कैसे करें?

f- mUekn (brainstorming)

mís';& अपने अपने सुझाव लेकर आगे आने के लिए सदस्यों को अवसर प्रदान करना(आलोचना के वातावरण में नहीं)।

rjhdk%&

१ किसी विशिष्ट कार्य को समझा दीजिए जैसेः– युवा वर्ष की योजना, विद्यार्थियों की कुछ प्रमुख अभिरुचियों की पहचान (और भी कोई अन्य विषय जिसके बहुत से विकल्प हो)

२. किसी विषय का परिचय दे दीजिए फिर उससे संबंधित समस्या को सुलझाने के लिए बिना किसी आलोचना के कम से कम समय में अधिक से अधिक सुझाव लिखने को कहिए।

३. यदि आवश्यक समझें तो सभी सदस्यों को 3 से 5 की टोलियों में बाँट दीजिए। हर टोली का एक सचिव बना दीजिए।

४. एक व्यवहारिक सत्र के रूप में शुरू कीजिए तथा सबको यह बता दीजिए कि वह विषय से संबंधित अधिक से अधिक बातें सोचे जैसे कि कक्षा दिन भर में करती है। सचित्र उनकी सूची तैयार करें।

५. 5 मिनट बाद जल्दी से उन सुझावों की गिनती कीजिए जो लिखे गए हैं।

६. अब दल से प्रश्न पूछिए।
(आ) क्या हर एक को अपना सुझाव देने का अवसर मिला।
(बा) क्या आप दूसरों के सुझावों की आलोचना करने से अपने आप को बचा सके।

७ व्यवहार इस सत्र के बाद किसी विशिष्ट विषय की घोषणा कीजिए। कुछ समय प्रश्नों तथा स्पष्टीकरण के लिए दीजिए।

८ हर एक दल को अपना सुझाव लिखने के लिए 10 मिनट दीजिए।

३ हर एक दल से सबसे अच्छे दो सुझाव चुनने को कहिए ताकि उन सुझावों को अन्य दलों से सुझावों के साथ मिलाया जा सके।

१० सभी सूचियों को इकट्ठा कीजिए ताकि हर सदस्य जान सके कि थोड़े से समय में कितने अधिक सुधार आए हैं।

११ योजना समिति का चुनाव कीजिए कि वह सभी सुझावों को जोड़ सके। अंत में अपने इस सत्र का मूल्यांकन कीजिए अब इसमें भाग लेने वालों से निम्नलिखित प्रश्न पूछिए।
(अ) आपके सुझाव जाने का क्या यह तरीका अच्छा है।
(ब) क्या बहुत से सुझाव दिए गए हैं।
(स) क्या आप सोचते हैं कि आपके सुझावों को जानने के लिए ऐसा आयोजन किया जाए।

„- >u>ukgV l= (buzz session)%

mís';%& कुछ कम आशंका भरे वातावरण में भी सलाह मशवरा करने तथा निर्णय लेने को आसान बनाया जाए।

rjhdk%&

१. सत्र के अरंभ में या बीच में दल के सामने एक प्रश्न रखा जाए।
२. थोड़े से चिंतन के बाद अपने पास वाले सदस्य के साथ विचार–विमर्ष करने के लिए दो–तीन मिनट दिए जाए।
३. एक निश्चित समय के बाद आम रूप से विचारों का आदान प्रदान किया जाए।

...- lkefgd [ky e lh[k% (group dynamic games)

mís';%& वास्तविक जीवन में प्राप्त किए गए अनुभव के द्वारा कुछ करके सीखने को प्रोत्साहित करना। इन खेलों की पुस्तकें भारत और विदेशों में मिलती है।

†- HkMdkbZ ?kVuk% (provoked incidents)

एकाएक कई प्रकार की परिस्थितियाँ पैदा की जा सकती है।

१. बिना किसी प्रकार की पूर्व तैयारी या सूचना के कोई भी सदस्य बड़े ही रहस्य पूर्ण ढंग से दल नायक को कोई चुनौती दे डालता है और एक संकट की स्थिति पैदा कर देता है।
२. दल नायक या वह सदस्य झुंझलाता हुआ कमरे के भीतर आता है अपवाद कमरे के बाहर फेंका जाता है।
३. सदस्यों को ज़रा सा भी आभास होने नहीं दिया जाता है कि यह सब एक नाटक मात्र है। उन्हें इसकी पूर्व योजना का कुछ भी ज्ञान नहीं होता। वह इस विकट परिस्थिति पर विचार विमर्श करते हैं तथा उस पर अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करते हैं।
४. अंत में बड़ी कुशलतापूर्वक सभी सदस्यों को बता दिया जाता है कि यह सब मात्र एक नाटक था।

‡- Hkfedk epu% (role play)

mís';%& किसी समस्या को जहाँ तक संभव हो सके उसके वास्तविक रूप में प्रस्तुत करना। कर्तव्य के मंचन तथा नाट्य कला की एकाग्रता पर नहीं पर पति परिस्थिति की मौलिकता पर।

१. विचार–विमर्श शुरू करना।
२. किसी समस्या का समाधान करना।
३. विचार विमर्श के परिणामों को प्रस्तुत करने के लिए इसको प्रयोग में लाना।

rjhdk%&

१. किसी परिस्थिति को मंचन करने के लिए चुने जाने के बाद अभिनय करने के लिए सदस्यों को चुन लिया जाता है।
२. अपनी भूमिका अदा करते समय वह उन लोगों की भावनाओं और अनुभूतियों में उतर जाते हैं जिनका वे अभिनय करते हैं।
३. दृश्यों को जहाँ तक संभव हो संक्षेप में रखा जाए।
४. दर्शक गण अभिनय की जा रही परिस्थिति पर विचार विमर्श करते हैं कि उस स्थिति में उनकी क्या प्रतिक्रिया होती है।
५. भूमि का मंचन का उद्देश्य किसी समस्या के समाधान के लिए होता है जैसे–जैसे मंचन आगे बढ़ता है दर्शकों को इस नाटक के सहयोगी बनने के लिए निमंत्रित किया जाता है।

^- udy% (miming)

mís';%& किसी समस्या को वास्तविक रूप में प्रस्तुत कर इसकी विविधता तथा कल्पना के लिए उचित अवसर प्रदान करना।

rjhdk%&

भूमि का मंचन से नकल का तरीका बिल्कुल भिन्न होता है क्योंकि इसमें कोई संवाद नहीं होता इसमें पार्श्व संगीत तथा व्याख्या की जाती है। प्रभावशाली होने के लिए ये स्वाँग बहुत ही संक्षिप्त और आसानी से समझ में आ जाने वाले हों।

‰- fp= Hkk"kk% (photo language)

mís';%& वैसे तो चित्र छाया चित्रों तथा आलेखों का कई प्रकार से प्रयोग किया जा सकता है पर निम्नलिखित प्रयोग अधिक उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

(अ) यह साधन युवकों के आपसी विचार विमर्श के बाद उनकी सामान रुचि को प्रकट करने में सहायक होते हैं इस प्रकार यह एक दूसरे को समझने तथा दल बनाने में सहायता करते हैं।
(आ) यह छायाचित्र अपने संबोधन तथा विचारोत्तेजक शक्ति द्वारा किसी भी समस्या को वास्तविक रूप प्रदान कर देते हैं तथा दल के सामने उसके सभी रूप को प्रदर्शित करते हैं। चित्रों के चुनाव के तरीके तथा उनके संदेशों के प्रति अपनी सहमति अथवा और सहमति प्रकट कर विद्यार्थी अपने आदर्षों तथा विचारधारा बताता है और इस प्रकार अपने प्रेरणात्मक आधार को चुन सकता है जो आज की दुनिया में अत्यावश्यक है।

/;ku n%&

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह आवश्यक है कि चित्र आदर्श प्रस्तुत करने योग्य अर्थ पूर्ण तथा जिज्ञासा पैदा करने की क्षमता रखने वाले होना चाहिए।

rjhdk%&

जिस उद्देश्य को लेकर इस शैली का प्रयोग किया गया हो उसी के आधार पर इसका तरीका भी बदला जा सकता है परंतु नीचे लिखी कुछ बातें विशेष रुप से ध्यान में रखना जरूरी है।

१. सभी चित्रों को एक पूर्ण दृश्य के रूप में रखा जाए अलग–अलग पंक्तियों में या अलग अलग मेजो पर नहीं।
२. 5 मिनट शांतिपूर्वक देख लेने के बाद और फिर उन पर कुछ मिनट चिंतन कर लेने के बाद सदस्यों से अपनी रुचि के अनुसार चुनाव करने के लिए कहा जाए।
३. इसके बाद जो विद्यार्थी अपने चित्र का परिचय कराना चाहता है कर सकता है जिन्होंने अभी तक अपना चित्र प्रस्तुत न किया हो वह सिर झुकाकर गंभीरता पूर्वक बोलने वाले को सुनें इस समय किसी भी प्रकार का वाद विवाद नहीं होना चाहिए अपनी शंका के समाधान के लिए प्रश्न अवश्य पूछे जा सकते हैं।

fofHkUu ç;kxk d fy, ekxn'ku

¼v½ lkefgd lokn

१. मेज या जमीन पर कई प्रकार के बहुत से चित्र फैला कर रख दीजिए ताकि हर एक उन्हें देख सके। कुछ देर देखने के बाद कहिए कि हर एक सदस्य अपने विचार के अनुसार एक चित्र चुने जो दल नायक के इन प्रश्नों का सबसे सही उत्तर दे सकता है।
   - अपने आप को दल के समझ प्रस्तुत करने में कौन सा चित्र आप की सबसे अधिक सहायता करता है।
   - आप किस चित्र को सबसे अधिक महत्व देते हैं।
   - कौन सा चित्र या प्रकट करता है कि आप जिस दिल में है वहां ज्यादा सुख का अनुभव करते हैं।
   - जिस दल में आप हैं उससे क्या आशा करते हैं।
२. दल के सदस्यों को भी सभी चित्र अच्छी तरह देखने और समझने के लिए

पर्याप्त समय दिया जाए। चित्र का चुनाव एक साथ किया जाए ताकि कोई भी सदस्य दूसरे से न प्रभावित हो और न दूसरे को प्रभावित कर सके।

३. चित्र का चुनाव हो जाने के बाद सभी सदस्यों को शांतिपूर्वक बैठ जाने दीजिए ताकि वह अपने इस चुनाव पर कुछ देर और चिंतन कर सके इसके बाद हर एक सदस्य अपने चित्र का परिचय देगा तथा यह बताएगा कि अपने इस चित्र का चुनाव क्यों किया प्रत्येक सदस्य को स्वतंत्रता पूर्वक अपने विचार प्रकट करने के लिए पर्याप्त समय दीजिए इस समय किसी भी प्रकार का वाद विवाद नहीं होगा शंका के समाधान के लिए प्रश्न पूछे जा सकते है।
अनुप्राणदाता इस समय तटस्थ रहेगा किसी को भी कोई सलाह नहीं देगा।

४. इस अभ्यास का प्रमुख उद्देश्य यह है कि सभी सदस्यों को एक दल के रूप में संगठित किया जाए ताकि वह एक दूसरे को भली–भांति समझ सके और अपने आपसी संबंध को मजबूत कर सकें।

¼c½ fopkj foe'k

१. पहले की तरह बहुत सी तस्वीरें मेज या जमीन पर फैला दी जाती है फिर विचार विमर्श के लिए जो विषय लाया गया है उससे संबंधित एक या दो चित्र हर एक सदस्यों द्वारा चुने जाते हैं कि वह उन पर स्वाभाविक रूप से अपने विचार व्यक्त कर सकें। यह चित्र विषय की विभिन्न पहलुओं की खोज करने में मदद देते हैं।

२. चित्रों के चयन के बाद उन पर टिप्पणी करने के लिए कहा जाता है विषय को अच्छी तरह समझने के लिए अन्य सदस्यों द्वारा प्रश्न पूछे जा सकते हैं कि वह अपने विचारों को और अधिक स्पष्ट कर सके। दल नायक तथा अनुप्राणदाता भी विषय से संबंधित ऐसे प्रश्न पूछ सकते हैं।

- आपने इसी चित्र को क्यों चुना दूसरे को क्यों नहीं।
- क्या आप स्वयं को इस चित्र में देख सकते हैं।

३. इस प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने के लिए दल को दो उप दलों में बांटा जा सकता है कि वह उप विशय पर विचार विमर्ष कर सके उदाहरण के लिए एक दल उन चित्रों को देखता है जो सच्ची स्वतंत्रता को प्रकट करते हैं तथा दूसरा दल उनको जो झूठी स्वतंत्रता को

४. इस पद्धति द्वारा यह दल एक समान विशय पर विचार विमर्ष करने के लिए केंद्रित हो जाता है यह आयोजन विशय के अध्ययन के पूर्व या बाद कभी भी किया जा सकता है।

lfEefyr #fp;k

१. जमीन या मेज पर कुछ चित्रों को फैला कर रख देने के बाद अनुप्राणदाता हर एक सदस्य से उसकी पसंद या नापसंद का चित्र चुनने के लिए कहता है और उससे कहता है कि वह यह भी बताएं कि उसे वह चित्र क्यों पसंद है या नापसंद है।

२. कुछ देर चिंतन के बाद दल का हर एक सदस्य अपना–अपना चित्र प्रस्तुत करता है और साथ ही अपनी पसंदगी या नापसंदगी बताता है। उस चित्र को

देखकर यदि किसी सदस्य को अपने जीवन का कोई अनुभव याद आ जाता है तो उन्हें प्रकट करने के लिए उस सदस्य को अवश्य समय दीजिए।

३. इस प्रक्रिया के अभ्यास का मुख्य उद्देश्य यह है कि हर एक सदस्य को अपनी रुचि या अरुचि प्रकट करने का मौका मिल सके तथा इस बात की भी खोज की जा सके कि क्या दल की कोई सामान्य रूचि है कि नहीं।

४. दल की इस भागीदारी के अंत में अनुप्राणदाता पूछ सकते हैं कि, क्या दल के समस्त सदस्य यह अनुभव करते हैं कि दल की कोई समान रुचि है? यदि है तो अगली बैठक में ऐसे विचार को विषय के रूप में रखा जा सकता है।

vkrfjd çfrfØ;k dh [kkst

१. चित्रों को मेज पर फैला कर रख दिया जाता है। चित्र बहुदा ऐसे होते हैं जो जीवन से निकट संबंध रखते हैं। चित्र के चुनाव के बाद अनुप्राणदाता सदस्यों से पूछते है कि जिस व्यक्ति का चित्र उसने चुना है उसके चेहरे पर वह कौन सी आंतरिक अनुभूति को देखता है। (यह अभ्यास खीस्त की विभिन्न चित्रों द्वारा किया जा सकता है। कौन से चित्रों में सदस्यों के विचारों की समानता है।

२. चित्र के चुनाव के बाद हर एक सदस्य को चित्र के चेहरे पर पढ़े गए भावों को प्रकट करने के लिए पर्याप्त समय दिया जाता है। सदस्यों द्वारा दी जा रही जानकारी को और अधिक गहन और स्पष्ट करने के लिए अनुप्राणदाता कुछ प्रश्न पूछ सकते है।

३. यह पद्धति दूसरों के जीवन की आंतरिक अनुभूति को खोजने में मदद पहुंचाती है।

ny ds vuHkoksa ij fpUru%&

१. दल के द्वारा जब एक सामान्य प्रक्रिया के लिए चित्रों का चुनाव कर लिया जाता है, तब उनसे पूछा जाता है कि इस प्रक्रिया द्वारा उन्होंने क्या सीखा तथा कैसा अनुभव किया। इस प्रकार के प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

- जो चित्र आपको दिखाए गए क्या उनमें कोई ऐसा भी चित्र है जो आपको विशेष रूप से प्रभावित करता है विशेषकर अभी इस प्रक्रिया के बाद?
- क्या आप अपनी पसंद को समझा सकते हैं।
- इस प्रक्रिया में आपने जो चित्र खोजा, क्या उसके बारे में आप अपने विचार प्रकट कर सकते हैं।

२. जब चित्रों का चयन कर लिया जाता है तब वे दल के समक्ष प्रस्तुत किए जाते हैं। समझाए जाते हैं। उन पर तर्क वितर्क किया जाता है। यह प्रस्तुतीकरण व्यक्तिगत रूप से गोलियों के प्रतिनिधियों द्वारा या किसी दूसरे रूप में किया जाता है।

३. यदि दल आत्मचिंतन तक

नहीं पहुंच पाया है तो अनुप्राणदाता इस प्रकार के प्रश्न पूछ सकता है।

- क्या यह चित्र पवित्र ग्रंथ की कोई बात प्रकट नहीं करता?

४ यह पद्धति दल के अनुभवों को और अधिक गहराई से विश्लेषण करने में मदद पहुंचाती है तथा हमारे चिंतन में पवित्र आत्मा के कार्यों की खोज में सहायक होती है।

Š pyfp= (movie)

mís'; %& जीवन की कोई स्थिति या समस्या को प्रक्रिया के रूप में चिंतन और कार्य के लिए प्रस्तुत करना।

rjhdk%&

१. किसी स्थानीय शाखा सूचना एवं संचार विभाग से कोई अच्छे चित्र का चुनाव कीजिए। चलचित्र छोटा और एक उच्च आदर्श प्रस्तुत करने वाला होना चाहिए।
२. प्रदर्शन के बाद सदस्यों को उस पर चिंतन करने के लिए कुछ समय दीजिए।
३. सदस्यों की भागीदारी चित्र शैली के आधार पर हो सकती है।

‹- xku dfork,¡ m)j.k foKkiu vkfn (songs, poems, quotations, advertisements etc.)

mís'; %& जीवन की एक परिस्थिति पर विचार तथा चिंतन करने के लिए प्रेरणा देना।

rjhdk%&

१. एक पूर्ण शांत वातावरण प्रदान कीजिए
२. उद्धरण की प्रतियां बाँट दीजिए
३. दिए गए उद्धरण को स्पष्ट रूप से सुनाइए, गाइए या अभिनीत कीजिए।
४. प्रत्येक सदस्य से कहिए कि वह उन पंक्तियों या शब्दों को रेखांकित करें जिनसे वह प्रभावित हुए हैं।

ff- çrhd ,o oLr% (symbols and objects)

mís'; %& चित्र भाषा के समान।

rjhdk%&फूल, पंत्तियाँ, पत्थर, लकडी के टुकडे, बत्तियाँ, पुरानी चिट्टियाँ, कलम, पेन्सिल आदि वस्तुएँ अपने विचार प्रकट करने, अपने संबंध तथा अनुभूति बताने में सहायक होती है। जैसा कि चित्र की भाषा में होता है।

ff- Hkk"k.k (speeches)

mís'; %& विचारों को और अधिक विस्तृत रूप से प्रस्तुत करना। दल के शर्मीले सदस्यों को उनके ही द्वारा पहले से तैयार कर लिए गए भाषण द्वारा अपने विचार प्रकट करने तथा खुलकर बात करने के लिए प्रोत्साहित करना।

rjhdk%&

बैठक के रूप में ही या बैठक के बीच में भी भाषण दिए जा सकते हैं। यह भाषण व्यक्तिगत रूप से या एक पूरे दल के द्वारा ही तैयार किए जा सकते हैं। यहाँ कुछ संकेत दिए जा रहे हैं।

१. अपने आप में आत्मविश्वास पैदा करने के लिएः–

अ. अपने विषय को अच्छी तरह समझ लीजिए।

आ. जो कुछ कहने की योजना बनाई है उसे क्रमवार जमा कीजिए।

इ. भाषण का एक एक शब्द मत रटिए। कुछ प्रमुख संकेतों को क्रमबद्ध एक कागज पर लिख लीजिए।

ई. अपने भाषण को दो एक बार जोर जोर से बोल कर अभ्यास कर लीजिए।

उ. अपनी घबराहट को दूर करने के लिए अनावश्यक रूप से हिलना डुलना या गला साफ करने जैसी व्यर्थ की क्रियाएँ मत कीजिए। भाषण देते समय आपको किसी प्रकार की घबराहट ना आए उसके लिए 'अ' तथा 'ई' का अभ्यास कर लीजिए।

२. भाषण के विषय की सामग्री एकत्र करने के लिए : पाँच 'क' का प्रयोग कीजिए (कौन, क्यों, क्या, कब, कहाँ) और भी अच्छे मापदंड के लिए 'कैसे' को भी लीजिए।

f„- iuy (panel)

mí';% पूर्व तैयारी के बाद किसी विषय पर विभिन्न विचारधाराओं को प्रकट करना।

rjhdk%&

क. दल विभिन्न व्यक्तिगत विचारधाराओं तथा विकल्पों वाले एक विषय का चुनाव करता है।

ख. पेनल के सदस्यों का चुनाव कुछ दिन पूर्व ही कर लिया जाता है जो स्थान में लेने वाले हैं उसकी स्वीकृति उनसे ले लेनी चाहिए।

ग. अपने पेनल की तैयारी में उसके सभी सदस्य आपस में विचार विमर्श करते हैं विषय पर चिंतन करते हैं तथा अपने अनुभव सुनाते हैं।

घ. भाषण के अवसर पर पेनल के सदस्य अपने श्रोताओं के सामने संचालन के दोनों और अंग्रेजी की 'वी' अक्षर के आकार में बैठ जाते हैं।

ड. संचालक महोदय विषय तथा पेनल के सदस्यों का परिचय देते है।

च. पैनल के सदस्यों का बारी बारी से भाषण होता है पर इस समय कोई किसी प्रकार का हस्तक्षेप या टीका टिप्पणी नहीं कर सकता।

छ. श्रोताओं द्वारा प्रश्न पूछे जाते हैं जिन पर पैनल के सदस्यों पर विचार–विमर्श तथा तर्क वितर्क होता है इस समय संचालक महोदय को बड़ी कुशलता पूर्वक इस विचार विमर्श में मार्गदर्शन देने की आवश्यकता है।

ज. पेनल और परिसंवाद में काफी अंतर है। पेनल में हर एक सदस्य

एक थोड़े से औपचारिक प्रस्तुतीकरण के बाद आपस में ही वार्तालाप तथा विचार विमर्श करते हैं।

f...- okn fookn% (debate)

mís';%& किसी विषय पर संक्षेप में बड़े ही तर्क पूर्ण ढंग से बहस करना।

rjhdk%&

१. विषय के पक्ष में बोलने वाले सभापति महोदय की दाहिनी ओर तथा विपक्ष में बोलने वाले उसके बाये ओर बैठते हैं। दोनों पक्षों के मुखिया सबसे आगे तथा उनके पीछे दूसरे वक्ता क्रमानुसार बैठते हैं।
२. सभापति महोदय विषय तथा वक्ताओं का परिचय श्रोताओं को देते हैं।
३. सभापति महोदय के बुलाने के बाद ही वक्ता बोलने के लिए खड़े होते हैं।
४. सर्व प्रथम पक्ष का मुखिया बोलता है। इसके बाद विपक्ष का मुखिया। अन्य वक्ताओं की अपेक्षा मुखिया को बोलने के लिए अधिक समय दिया जाता है।
५. प्रत्येक वक्ता को जितना समय दिया जाता है उसके समाप्त होने के 1 या 2 मिनट पहले सभापति महोदय एक संकेत देते हैं।
६. पहले पक्ष का वक्ता आता है फिर विपक्ष का और फिर इसी क्रम में यह प्रतियोगिता चलती रहती है।
७. जब सभी वक्ता बोल चुके होते हैं, तब पक्ष के मुखिया को अपने तर्कों को संक्षेप में कहने का मौका दिया जाता है।
८. पक्ष की ओर से मतदान कराए जाने के पूर्व सभापति महोदय पक्ष तथा विपक्ष के तर्कों की संक्षेप में व्याख्या कर सकते हैं।
९. मतदान हो जाने के बाद सभापति महोदय अपने तर्क और टिप्पणी प्रस्तुत कर सकते हैं।

f†- fQ'k c,y (fishbowl)

mís';%& किसी विषय पर विचार विमर्श करने में सदस्यों की संख्या में वृद्धि करने में मदद देना तथा हर एक सदस्य के उस विषय के ज्ञान की वृद्धि करना जिसमें वह तथा अन्य दूसरे सदस्य भाग लेते है।

rjhdk%&

अ. जिस विषय का चुनाव किया जाए वह भाग लेने वाले सदस्यों को उलझाने वाला ना हो।

ब. इस अभ्यास के उद्देश्य तथा कार्यविधि को संक्षेप में समझा दिया जाए।

स. भाग लेने वाले सदस्य भीतरी गोले में तथा दर्शक गण बाहरी गोले में बैठते हैं। बाहरी गोले में बैठने वालों को चाहिए कि वे विचार–विमर्श करने वाले भीतरी गोले में बैठे सदस्यों को ध्यानपूर्वक देखें और शांतिपूर्वक उनकी बातें सुने। इनका काम यह होता है कि वह गिने की कितने सदस्य इस तर्क वितर्क में भाग ले रहे हैं, कितने सदस्य ऐसे हैं जो कुछ बोलना चाहते हैं, पर बोलते नहीं। वह इस बात का ध्यान रखें कि कौन क्या बोलता है कौन बार–बार हस्तक्षेप करता है, किसे बार बार टोका जाता है

द. जब भीतरी दल विचार–विमर्श करता है उस समय बाहरी दल शांतिपूर्वक उसका

अवलोकन करता है। प्रारंभ में कुछ देर शांति रहती है पर साधारणः कोई सदस्य अपनी बात शुरू कर के कार्यक्रम को शुरू करता है।

प. तर्क वितर्क के लिए निर्धारित समय की समाप्ति की सूचना दी जाती है। इसके बाद बाहरी दल में से कोई जो कुछ उसने देखा और सुना उसकी रिपोर्ट पेश करता है और भीतरी दल शांतिपूर्वक उसे सुनता है।

¼Q½ eY;kdu d fy, dN ç'u%&

१. किन चीजों ने हमारे तर्क वितर्क में बाधा पहुंचाई।
२. किन चीजों ने हमारे तर्क वितर्क में सहायता पहुंचाई।
३. क्या इस प्रकार का तर्क वितर्क लाभदायक था।

इस प्रकार के विचार विमर्श में जो चीजें बाधा डालती है तथा जो मदद करती है उनका संक्षेप में वर्णन करने के बाद यह बात बताना है कि यह आयोजन और भी अच्छा हो सकता था। यदि

- जो कुछ पहले बताया गया था उसे सुनते और उसी प्रकार काम करते।
- दूसरों को मौका देते और उनकी मदद करते जो इसमें सक्रिय भाग लेना चाहते थे पर नहीं लिया।
- दूसरे लोगों की विचारधारा को स्वीकार करते हैं जैसा कि स्वयं की विचारधारा को मूल्यवान समझते हैं।

f‡- lk{kkRdkj (interview)

mís';%&

१. दूसरों की विचारधारा के प्रति सचेत रहना तथा वार्तालाप में उनके साथ सम्मिलित होना।
२. साक्षात्कार के परिणामों को विचार–विमर्ष के लिए एक आरंभ बिंदु के रूप में या एक बैठक के रूप में प्रयोग किया जा सकता है जब कुछ व्यक्तियों का साक्षात्कार किया जा रहा था । उस समय उस में भाग लेने वाले सदस्य क्या एक जीवित या ऐतिहासिक व्यक्ति की भूमिका निभा रहे थे।

rjhdk%&

१. यह पहले से तय कर लीजिए कि किस का साक्षात्कार लेना है और किस लिए।
२. पूछे जाने वाले प्रष्नों की एक सूची बना लीजिए कम उलझन भरे तथा कम व्यक्तिगत प्रष्नों से षुरू कीजिए ऐसे प्रष्न मत कीजिए जो अधिक जिज्ञासा पूर्ण अर्थ वाले हो।

३. सभी प्रष्नों को कंठस्थ कर लीजिए कागज आदि का प्रयोग मत कीजिए प्रष्नों को बड़े सहज भाव में प्रस्तुत कीजिए।
४. जिस व्यक्ति का साक्षात्कार किया जा रहा है उसे इस अभ्यास का उद्देष्य समझा दीजिए और इस प्रकार उसका विष्वास तथा सद्भावना पा लीजिए।
५. यदि संभव हो तो उसी जगह सभी उत्तरों को कागज पर लिख लीजिए या टेप कर लीजिए
६. तत्पष्चात सभी उत्तरों को चाट कर उनका वर्गीकरण कीजिए।
७. साक्षात्कार के परिणाम को दल के समक्ष उसके ज्ञान वृद्धि तथा विचार–विमर्ष के लिए प्रस्तुत कीजिए।

fˆ ijh{k.k (survey)

इसका उद्देष्य एवं पद्धति साक्षात्कार के ही समान है परंतु उससे अधिक वास्तविक तथा स्पश्ट है विस्तृत जानकारी के लिए पढ़िए समंतदपदह जीतवनही कवपदह।

f‰- tkx:drk fuek.k gsrq Hkze.k (awareness walk)

mís';%& अपने ही आसपास के दुनिया के लोगों तथा उनकी स्थिति की सर्वप्रथम जानकारी प्राप्त करना तथा दिल और दिमाग से उनका अवलोकन करने की आदत का विकास करना है।

rjhdk%&

१. भ्रमण के साथ बातचीत का कोई विशय या प्रसंग होना चाहिए जैसे प्रकृति बच्चे सफाई यातायात आदि विशय स्वतंत्र भी हो सकता है
२. विद्यार्थियों सदस्यों में पहले कुछ सीखने की जिज्ञासा पैदा कीजिए तब किसी प्रसंग पर चर्चा शुरू कीजिए।
३. आपने जो कुछ देखा उसे अपने मन में अच्छी तरह बैठा लीजिए।
४. मन में बैठा लीजिए कि वह विशेश वस्तु व्यक्ति स्थिति आप को क्यों प्रभावित करती है।
५. उस वस्तु व्यक्ति संगति के प्रति अपनी स्वयं की संवेदनशील प्रतिक्रिया का अवलोकन कीजिए।
६. अंत में अपने अवलोकन को दल के साथ मिलाकर उस पर चिंतन मनन कीजिए।

fŠ-- dsl LVMh leL;k v/;;u (case study)

mís';%& समस्या को सुलझा ने की प्रवृत्तियों और कुशलता ओं के साथ ही साथ प्रसन्न करने तथा विश्लेशण करने की योग्यता का विकास करना।

तरीकाः–

१. किसी समस्या के अध्ययन को पहले से तैयार कर लीजिए उदाहरण के लिए किसी घटना या स्थिति का विस्तारपूर्वक वर्णन जो मौखिक लिखित चलचित्र या इन तीनों के मिश्रित माध्यम द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है।
२. सदस्यों को पहले से ही पूर्ण विशेश सामग्री वितरित कर दीजिए ताकि उन्हें पहले से ही समस्या के बारे में पूरी जानकारी हो जाए।

३. समस्या अध्ययन में प्रस्तुत की गई स्थिति पर एक उचित एवं अर्थपूर्ण विचार विमर्श कीजिए

f‹- nljk dk LFkku ykuk (stepping into anothers shoes)

mís';%& बड़े मनोरंजन पूर्ण तथा मन बहला ओके ढंग से दूसरे लोगों के जीवन तथा उनकी समस्याओं की जानकारी प्राप्त करना।

rjhdk%&

इसके लिए विभिन्न प्रकार के अभ्यास किए जा सकते हैं उदाहरण के लिए एक दल से साला के एक चपरासी एक अध्यापक या एक हम्माल का बजट बनाने के लिए चाहिए यह एक हरिजन एक विधवा या एक कारीगर के जीवन का वर्णन लिखने को कहिए अथवा वह अपने आप को यह महसूस करें मानो कि वे ऐसे बालक है जो समय पर अपने स्कूल की फीस नहीं चुका पाते हैं या एक विवाहित मां हो।

„å- LoIu n[kuk (dreaming dreams)

mís';%& भविश्य के लिए ऐसे दृश्य का सूत्रपात किया जाए जो वर्तमान जीवन और उसकी प्रतिक्रियाओं के लिए एक उद्देश्य निर्धारित कर सकें।

rjhdk%&

१. एक बड़ा हल्का वातावरण निर्मित कीजिए
२. इनमें से किसी एक विशय को अभ्यास के लिए रखिए
अ. अपने आप को 40 वर्श का एक व्यक्ति मानकर उसका वर्णन कीजिए

दल को किस तरह शुरू किया जाए

;¡ [kh Nk@ ;¡- Nk- l¡- ny dk vkjEHk ,o of)

(अ) दल को किस प्रकार शुरू किया जाए ।

इस संचलन में दिलचस्पी रखने वाला एक व्यक्ति एक दल की शुरुआत कर सकता है। एक विद्यार्थी यदि अपनी शाला में या पड़ोस में ;¡-[kh-Nk@;¡-Nk-l¡- को शुरू करना चाहता है तो साधारणत अपने मित्रों के साथ कुछ समस्या पर चर्चा करता है। जैसे शाला से निकाल दिए जाने वाले लड़के आदी पर अपनी दिलचस्पी बढ़ाता है। कभी–कभी ऐसी दिलचस्पी रखने वाला व्यक्ति एक प्रौढ़ भी हो सकता है जैसे प्राचार्य, विद्यार्थियों का सलाहकार, सामाजिक कार्यकर्ता, वह शिक्षक जो युवा पीढ़ी में नेतृत्व को बनाने में विश्वास करता है; जो विद्यार्थियों के समर्पण को समझता है या जिसने स्वयं के समर्पण का निश्चय कर लिया है। इस प्रौढ़ व्यक्ति को युवा पीढ़ी की समस्याओं की जानकारी रहती है जो काफी हद तक देश की समस्याओं से जुड़ी रहती है। इस वयस्क के उनके साथ काम करने से यह युवजन उन समस्याओं के प्रति सचेत हो जाते हैं और स्थिति के परिवर्तन के लिए एक साथ काम करते हैं।

दूसरी ओर दिलचस्पी रखने वाला व्यक्ति बिना कोई समस्या लिए सीधा एक दल शुरू करता है। वह आसपास के कुछ सक्रिय विद्यार्थियों को इकट्ठा करता है, उनको इस प्रकार के दल बनाने की योजना समझाता है और दल की शुरुआत कर देता है। कार्डिनल जोजफ कारडाइन ऐसे युवा संचलन के प्रवर्तक है; इसके विषय में... पहली बात यह है कि हम उन्हें भाषण ना दे, हम उनको कुछ काम करने के लिए, उन पर जिम्मेदारी डाल कर शुरू करते हैं। जिन तरीकों से एक दल तैयार किया जा सकता है उन तरीकों को दो भागों में बांटा जा सकता है। अनौपचारिक और औपचारिक चूंकि हम जीवन में युवा लोगों की अगुवाई को महत्व देना चाहते हैं। इसलिए जब कभी संभव होता है, अनौपचारिक तरीकों का महत्व दिया जाता है।

f- vukipkfjd rjhd %&

तरुणों की बुद्धि, रूचि और आदतों को देखो (संगीत, खेलकूद, नाटक, चलचित्र, टिकट इकट्ठा करना, पर्वतारोहण आदि) और वहीं से शुरू करो।

- अपने कार्य और योजना को स्थानीय समस्या या आवश्यकता की प्रक्रिया के रूप में शुरू करो जैसे सफाई, स्वास्थ्य, बाढ़ पीड़ितों के लिए धन या कपड़े इकट्ठे करना, बच्चों की संस्थाओं को जाना आदि।
- शाला में, खाना खाने की छुट्टी में, शाला के बाद, खेल के बाद, गिरजे के बाद, बालकों से स्वेच्छा से बराबर मिलो।
- मित्रों के समूह से संबंध जोड़ों और उनके पसंद की क्रियाओं का प्रस्ताव उनके सामने रखो।
- जो दल नायक मौजूद हैं जैसे कक्षाओं के कैप्टन हाउस मास्टर आदि को यू.खी. छा./यु.छा.सं की इकाई में शामिल करो।

„- vkipkfjd rjhds %&

¼v½ çjd lHkk"k.k }kjk%&

इन वार्तालापों को बालकों के मनोरंजन 'गपशप' के रूप में शुरू करो। फिर यह मालूम करो कि वह अपने आसपास की किन चीजों को पसंद करता है और किन को नहीं। 'उसके लिए वह क्या कर सकता है।' अक्सर यह उत्तर मिलता है ''कुछ नहीं''। आप पहले ''कुछ नहीं'' को ही लीजिए। एक अनुप्राणदाता की जिम्मेदारी बहुत बड़ी होती है। उसे यह बताना है कि संचलन में कितनी शक्ति है। उसे उनको समझाना है कि यह संचलन नए भारत को ईश्वर का राज्य बनाने का लक्ष्य रखता है। अनुप्राणदाता इन विद्यार्थियों को एक चुनौती दे कि वह अपने ही छात्र जगत में एक नए भारत तथा ईश्वर के राज्य की स्थापना करें। कैसे? कक्षा के हर एक लड़के को दूसरी कक्षा के लड़कों के अलग–अलग नाम दे दीजिए कि अगले सप्ताह वे उनसे उनके घर जाकर मिले। देखने में तो यह काम साधारण सा है। पर कभी–कभी यह जबरदस्त चुनौती भरा और संकट पूर्ण होता है। विद्यार्थी को एकाएक काम सौंप देते हुए शुरू करना बड़ा महत्व रखता है इस प्रस्ताव के विभिन्न कारण दिए जा रहे हैं।

- ♣ उन्हें विश्वास दिलाया जाता है कि यह संचलन कार्य करने के लिए है, ना कि केवल तर्क वितर्क के लिए।
- ♣ यह मनोवैज्ञानिक है। यह बहुत ही छोटे छोटे कार्यों द्वारा उनमें नेतृत्व करने की शक्ति को चुनौती देता है, जैसे अपने दल के विवरण के लिए कॉपी खरीदना, बाढ़ पीड़ितों के लिए धन या कपड़े एकत्रित करना आदि।
- ♣ या यथार्थ में गतिशील है। सदस्य लगातार खोज करते ही रहते हैं। वे अपने आवश्यकता और कमजोरियों की खोज करते हैं और इस संचलन को उन सब आवश्यकताओं की पूर्ति का एक उपकरण मानते हैं।

¼c½ ny dks dls fodflr fd;k tk, %&

जब दल शुरू हो गया तब दूसरा कार्य जो तुरंत करना है वह यह है कि इसे 'प्रेम और सेवा का समुदाय' बनाया जाए। दल की इस अवस्था में अनुप्राणदाता की भूमिका बड़ी जिम्मेदारी पूर्ण होती है। सदस्यों का परिचय, उनका आपसी मेल मिलाप, खोज और प्रार्थना में भागीदारी, मनोरंजन आदि के लिए अलग–अलग सत्र की आवश्यकता पड़ती है। इसमें सबसे बड़ी और जरूरी बात यह है कि इस संचलन के हर एक दल को अपनी ही परिस्थिति में, जिसमें स्वयं अनुप्राणदाता भी रहता है काम करना है। कार्डिनल कार्डाईन ने नेताओं से कहा .....स्वयं काम करो कि वह देखें...उनके साथ काम करो कि वह सीखें।...उनको स्वयं करने दो कि वह अनुभव प्राप्त करें। (पहले व्यक्तिगत रूप से फिर समूह में) ...तब योग्यतानुसार उनको किसी कार्य विशेष की स्थाई जिम्मेदारी सौंप दीजिए। सफलता धीरे धीरे मिलेगी। आपको नियमित रूप से प्रत्येक कार्य को देखना और उसे बार–बार दोहराना होगा और इस प्रकार कार्य के प्रति और बड़ी जिम्मेदारी जोड़ दीजिए।

एक दल को गठित करने और उसके सदस्यों में नेतृत्व की क्षमता बनाने में अनुप्राणदाता का, प्रत्येक सदस्य से व्यक्तिगत संपर्क रखना बड़ा ही महत्वपूर्ण तत्व है। कार्डाइन कहते हैं कि मोटर कारों की तरह नेता एक ही साथ ढेर सारे नहीं बनते पर धीरे–धीरे व्यक्तिगत रूप से एक–एक करके बनते हैं। (प्रशिक्षण कार्यक्रम का अधिक जानकारी के लिए आगामी अध्ययन को पढ़िए।)

¼l½ uœr'Ro çf'k{k.k dh voLFkk,¡ %&
चूंकि हमारे अधिकांश सदस्य किशोर या यौन अवस्था के होते हैं और हम उनमें तीव्र गति से परिवर्तन होता देखते हैं। अतः हमारे प्रशिक्षण कार्यक्रमों को इस तथ्य के अनुकूल बनाना नितॉंत आवश्यक है।

¼v½ çFke voLFkk %&
सातवीं और आठवीं कक्षा के तरुणों को उनकी जीवन शक्ति अनुसंधान और परीक्षण की अभिलाषा, स्वतंत्रतापूर्वक कार्य करने तथा विचार करने की शक्ति में वृद्धि के अनुसार समझा जा सकता है। इस उम्र में एक विद्यार्थी नायक – उपासना की अवस्था में होने के कारण वे अपने युवा अनुप्राणदाता के नेत्रत्व और प्रभाव होते हैं। वे उसके नेत्रत्व में बड़ी उत्सुकता से हर एक कार्य में भाग लेंगे जो उन्हें एक समर्पित दल में बदल देगा तथा उन्हें अपने व्यक्तिगत तथा सामूहिक रुप से दूसरों की सेवा के लिए उत्साहित करेंगे।

सामाजिक समस्याओं को समझने, उनकी जानकारी प्राप्त करने के लिए, अध्ययन द्वारा, अपने ही क्षेत्र का भ्रमण करके समाज सेवी संस्थाओं में जाकर तथा कुछ महत्वपूर्ण तथा मनोरंजक वार्तालापों द्वारा उनका मार्गदर्शन करना चाहिए।

¼c½½ nœljh voLFkk%& जब विद्यार्थी कुछ समय के लिए इस संचलन का सदस्य रह चुका है और इसके कार्यों तथा दल के कार्य करने की समस्याओं को समझ लेता है तब हम चाहते हैं कि उन्हें नेतृत्व का प्रशिक्षण अधिक स्पष्ट रूप से दिया जाए। इस अवस्था में संचलन की स्थापना, उसके तत्व, उसकी आध्यात्मिकता तथा उसकी कार्यप्रणाली का अध्ययन करते हैं। वह जीवन के पुनर्विलोकन का अभ्यास करते तथा बैठक बुलाने, कार्यों की व्यवस्था करने तथा शिविरों की योजना बनाने का प्रशिक्षण ग्रहण करते हैं। इन सारे कार्यक्रमों के साथ ही साथ विद्यार्थी स्वयं के व्यक्तित्व विकास की ओर बराबर ध्यान देता है।

¼l½ rhljh voLFkk%& जब विधार्थी अपनी पाठशाला की अंतिम पढ़ाई के करीब पहुंच जाते हैं तब उनमें जो इस संचलन के सदस्य रह चुके हैं और जिन्होंने दो एक शिविरों में भाग ले लिया है उन्हें समाज का और अधिक गहराई से विश्लेषण करने के लिए मार्गदर्शन दिया जाता है, ताकि वे उसके लक्षणों और समस्याओं का, उसकी उपलब्धियों और आवश्यकताओं का अध्ययन कर सकें। इन प्रक्रियाओं द्वारा भविष्य के लिए और अधिक, परिपक्व एवं अर्थपूर्ण रुचियां पैदा करने योग्य बन जाते हैं।

संचलन की कार्य- प्रणाली

यु.खी.छा./यु.छा.सं. क्या करता है। यह अनजान आलोचकों द्वारा ही नहीं पर समझदार समर्थकों द्वारा भी कई बार पूछा जाता है। यह संचलन केवल 'समाज कार्य' के लिए ही नहीं है। इसकी गहराई में इसके अतिरिक्त कुछ और भी है। जितना मोहक यह दिखता है उससे कई गुणा अर्थ इसकी गहराई में छिपा है। 'कार्य' उसी समय फलदायक बन जाता है जब उसने परिवर्तनशीलता प्राप्त कर ली हो। इस संचलन की प्रभावशीलता, 'कार्य' और 'परिवर्तनशीलता' में इसकी प्रणाली के प्रति एक निश्ठावान लगाव पर निर्भर होगी।

हमारा लक्ष्य विद्यार्थी और उसका वातावरण है जिसमें वह रहता है। (परिवार, शाला, धर्म, समाज) क्योंकि वही वातावरण उसके जीवन को रुप देता है। यह जागरूकता बाहरी रुप पर ही सीमित नहीं होती। पर यह कोशिश करता है कि और अधिक गहराई में उतर कर व्यवहारों, मनोवृतियों, मान्यताओं, एक विशेष परिस्थिति के कारणों और प्रभावों तथा अन्य दूसरी जानकारियों की जो और भी अधिक गहराई से समझने के लिए उपयुक्त हो उनकी वास्तविकता की खोज करें। इन तथ्यों का मूल्यांकन विवेकपूर्ण नैतिक सिद्धांतों के आधार पर होता है। तब आगे व्यक्तिगत समर्पण और उस वास्तविकता को बदलने और उसे नया तथा और अधिक 'मानवीय' बनाने के लिए इसका प्रयास होता है। इस प्रकार इस संचलन की कार्यप्रणाली व्यर्थ के असंबद्ध बौद्धिक वाद विवादों और एक 'अंधे कर्मवाद' को दूर करने का प्रयास करती है। फिर विश्वास और जीवन, धर्म और सामाजिक व्यवहार के द्वैतवाद को सुलझाने के लिए अगला कदम उठाता है। संचलन की यह सारी प्रक्रिया जीवन का पुनर्विलोकन कहलाती है।

thou dk iqufoZykdu%& पुनर्विलोकन एक 'प्रक्रिया' मात्र ही नहीं है जो सभाओं को मनोरंजक और उपयोगी बना देती है। परंतु यह जीवन की एक राह है। वास्तविकता की एक पहुंच है जो हमारे स्वयं के जीवन को उपयोगी और अर्थपूर्ण बनाती है। यह समय के प्रतीकों को देखने और समझने का एक प्रयास है कि वह वास्तव में एक जिम्मेदारीपूर्ण जवाब देने के लिए बुलाने वाली ईश्वर की आवाज है।

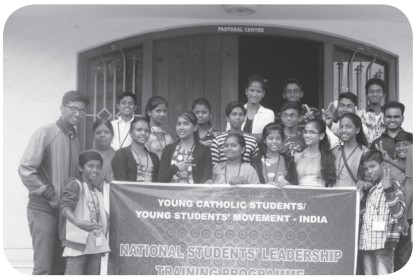

पुनर्विलोकन की जागरूकता के लिए कुछ मौलिक मनोवृतियों की आवश्यकता है। संचलन के सदस्यों को इस बात की जानकारी होनी चाहिए की उनमें और उनके आसपास कुछ चीजें ऐसी है जिन को बदलना जरूरी है। उनमें यह दृढ़ विश्वास होना चाहिए कि दूसरे लोग ऐसी चीजों की खोज करने और बदलने में उनकी मदद कर सकते हैं। अंत में यह भी कि ईश्वर हर समय इतिहास में क्रियाशील है और जीवन की घटनाओं द्वारा हमसे बात करता है।

पुनर्विलोकन की तीन अवस्थाएं हैं हर एक को पूरा करने में एक सत्र से भी ज्यादा समय लगता है। जाग्रत निरीक्षण, चिंतन और कार्य। तद्नंतर कार्य का मूल्यांकन होना तर्कसंगत है ।

¼ voykdu½%&

१ किसी वास्तविक तथ्य या घटना का संक्षेप में वर्णन करता है, जो उसने देखी है, इससे कहीं ज्यादा अच्छा होगा यदि वह उससे संबंधित हो।

२ इन वास्तविक तथ्यों में से किसी एक को उसके महत्व, आवश्यकता, आवर्तन, संबद्धता की संभावनाओं के आधार पर उसकी प्रतिक्रिया के लिए चुना जाए। फिर उस वास्तविकता का विस्तृत रूप से वर्णन किया जाए। जैसे शाला में गरीब विद्यार्थी की वास्तविकता।

३ इस यथार्थ से संबंधित अनेक व्यक्ति कौन है? (नाम नहीं) इस परिस्थिति की मान्यता पर उनकी क्या प्रतिक्रिया है? किस मूल्यों ने उनको प्रेरित किया है।

४ उनकी ऐसी मनोवृत्तियां एवं मान्यताएं क्यों हैं? कौन उनको प्रभावित करता है?

५ क्या कोई दूसरी परिस्थितियां भी है जो समान मनोवृति एवं मान्यताएं रखती है (विद्यार्थी के जीवन में और उनके समाज में धर्म में राजनीति में।)

६ क्या ऐसी मनोवृत्तीयाँ और मान्यताएँ आपके दल में भी हैं?

७ ऐसी परिस्थिति का मुख्य कारण क्या है?

८ इस विशेष मामले में और दूसरी परिस्थितियों में ऐसी मनोवृत्तियों और मान्यताओं का क्या परिणाम है?

¼c½ fpru %&

१ आपके विचार में लोगों को इस परिस्थिति में कौन सी मनोवृत्तियों और मान्यताओं को ग्रहण करना चाहिए, क्यों?

२ क्या आपका धर्म इन मान्यताओं को ऊपर उठाता है या उन्हें नीरुत्साहित करता है, कैसे?

३ यु. खी. छा./ यु. छा. सं. का क्या दृष्टिकोण है?
४ किस चीज को बदलना है... अपने में, परिस्थिति में।

¼l½ dk;l %&

१ आप किस कार्य द्वारा प्रतिक्रिया करने वाले हैं ? आप अपने आप में कौन सा परिवर्तन लाने वाले हैं ? किस प्रकार? किसके साथ?
२ आपने जिन मान्यताओं की खोज की है उनकी भागीदारी किसके साथ करने वाले हैं ?कैसे?
३ इस घटना के बारे में आप कुछ कर सकते हैं जिसे आप ने शुरू की है, कैसे? किसके साथ?

eY;kdu

मूल्यांकन हर एक कार्य का अनिवार्य तत्व है। एक पर्याप्त समय के बाद एक दल अवलोकन के लिए, लिए गए कार्यों का मूल्यांकन करता है। क्या कार्य पूर्ण रूप से किया गया था? क्या इसने किसी समस्या या परिस्थिति में कोई बुनियादी परिवर्तन किया है ?

जो लोग इससे संबंधित थे उन पर व्यक्तिगत क्या प्रभाव पड़ा? क्या इसमें उनकी जानकारी में वृद्धि लाई ?

सदस्यों के अतिरिक्त और कौन लोग शामिल है? अब हमें क्या करना है? यह कुछ ऐसे प्रश्न है जो लाभदायक रूप से पूछे जा सकते हैं।

"आप हमेशा इतने छोटे बनिये की
हर व्यक्ति आपके साथ बैठ सके,
और आप इतने बड़े बनिये की
आप जब उठे तो कोई बैठा न रहे।"

संचलन की आध्याम्किता

¼ v½ gekjk cfu;knh fo'okl%– हम यह विश्वास करते हैं कि मनुष्य–मनुष्य में बहुत नजदीक का संबंध है। ईश्वर ऐसा नहीं है जो मनुष्य से और उसके जीवन की घटनाओं से दूर रहता है। ईश्वर मनुष्य को अपने प्रेम, अपनी सच्चाई और अपनी स्वतंत्रता का भागीदार बनाने के लिए बुलाया है वह मनुष्य से चाहता है कि वह इस पृथ्वी को मनुष्य के रहने के सुयोग्य जगह बनाए इस उद्देश्य के लिए ईश्वर ने मनुष्य को शक्तियों और शरीर, हृदय, मन और आत्मा की सामर्थ से संपन्न किया है और उसको निमंत्रण देता है कि वह अपनी सामर्थ्य को काम में लाए और इस पृथ्वी को ईश्वर के बच्चों के उपयुक्त बनाएं। सब मनुष्यों को उनके विश्वास, जाती, हालत या पद का ध्यान दिए बिना ईश्वर का राज्य बनाने के लिए बुलाया जाता है।

¼c½ ekuo dh okLrfodrk%& यदि हम जिंदगी को देखें किस हालत में वह है तो हम देखेंगे कि आज मनुष्य पद की प्राप्ति के लिए संघर्ष कर रहा है जिसके लिए वह अपनी शक्ति और सामर्थ्य को काम में ला रहा है। स्वार्थपरता, शोषण और सभी प्रकार के प्रतियोगी दबाव मनुष्य को ऐसे समुदाय बनाने के लिए बाध्य कर रहे हैं जो अमानवीय और नास्तिक बनते जा रहे हैं। अपना जीवन बनाए रखने के घोर संघर्ष में मनुष्य स्वत्व को पाने के लिए सर्वाधिक जोर देता है। इस प्रकार उनकी सारी मान्यताएं और मनोवृत्तियाँ, प्रभुत्व, सत्ता और धन प्राप्त करने में केंद्रित हो गई है। वही मनुष्य महत्वपूर्ण समझा जाता है जिसके पास अधिक शक्ति, ऊंचा पद या सुविधाएँ हैं। मनुष्य का उसका अपना कोई महत्व नहीं है। एक मनुष्य अपनी भलाई और लाभ के लिए दूसरे मनुष्य का उपयोग कर रहा है। यही शक्ति और सामर्थ्य जो ईश्वर ने मनुष्य को अपना राज्य बनाने के लिए दी है।

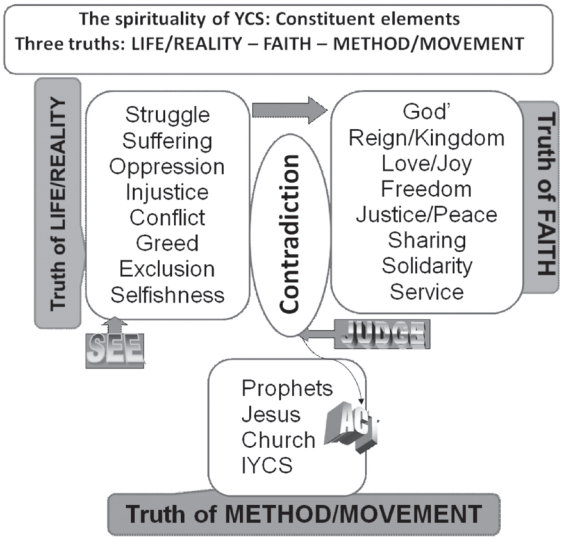

इस शक्ति को सही ढंग से काम में लाना है तो वह इस संसार को जिसने मानव को अमानव समझकर शोषण किया जाता है बदलकर 'ईश्वर का राज्य' बना दे जिसमें मनुष्य, एक मनुष्य की तरह रह कर अपनी उन्नति कर सकें।

¼l½ ;¦-[kh-Nk-@;¦-Nk-l¦- d¦ fl)kr ¼fopkj/kkjk½%& उपरोक्त दृष्टिकोण के अनुसार यह संचलन इस सच्चाई पर प्रभाव डालता है कि ईश्वर ने मानव को मानव होकर रहने के लिए बनाया है; यह ना की वस्तु जैसा, जिसे उपयोगिता के अनुसार काम में लाया जाता है अथवा फेंक दिया जाता है। यह संचलन इस बात पर बल देता है कि इसके सदस्य एक दूसरे को व्यक्ति के रूप में समझे, ना कि उसके अच्छे या बुरे गुण के रूप में जो हर व्यक्ति में होते हैं। यह छोटे–छोटे दल बनाने के लिए प्रोत्साहन देता है जिसमें व्यक्ति ऐसा बनाया जाता है कि वह अपने मान्यताओं का अनुभव कर सकें। इस प्रकार वास्तविक मान्यताओं और मनुष्यों का लगातार खोज करते रहना ही इस संचलन की आत्मा है। वह मनुष्य की एक ऐसी झलक की खोज में है जहाँ हर व्यक्ति की मान्यताएँ हों, मूल्य हो; क्योंकि वह ईश्वर के द्वारा बनाया गया है जिससे वह इस संसार को बनाने के लिए बुलाता है। जीवन के पुनर्निरीक्षण द्वारा यह संचलन यह प्रयास करता है कि इसके सदस्य अमानवीय मान्यताओं और मनोवृत्तियों का मुँहतोड़ जवाब दे। यह अपने हर सदस्य को जीवन में घटने वाली दिन प्रतिदिन की घटनाओं से तटस्थ या उनके प्रति उदासीन रहने नहीं देता जो कि एक को बनाती है या बिगड़ती है। प्रतिक्रिया सदस्य के विश्वास के अनुसार होती है। इसलिए यह संचलन 'विश्वास प्रेरित' प्रतिक्रिया को प्रोत्साहन देता है जो दैनिक जीवन की घटनाओं से जुड़ी होती है।

¼M½ /ke dh Hkkfedk%& आध्यात्मिक रूप से यह संचलन भारत में प्रचलित अनेक धर्मो, संस्कृतियों तथा परंपराओं को स्वीकार करता है। वह यह विश्वास करता है कि एक विद्यार्थी का जीवन जिस धर्म के सिद्धांतों के आधार पर डाला गया हो– चाहे वह किसी भी जाति या धर्म का हो, चुनौती से भरा और संकटपूर्ण होता है। अनैतिकता की ओर झुकाव, भौतिकवादी जीवन की इच्छा, विज्ञान के द्वारा धर्म का कृत्रिम विरोध, आधुनिक समाज के स्वतंत्र विचारधारा आदी विद्यार्थी की आत्मा पर अधिकार जमाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। दूसरी ओर धर्म और उनकी सैद्धांतिक विषय वस्तु, परंपरागत संरचनाएँ और कर्म पर आधारित रूपरेखाओं को बहुत कम स्वीकार किया और समझा जा रहा है। विद्यार्थी ईश्वर के चैतन्य और अस्तित्व पर विश्वास करने में कठिनाई महसूस कर रहे हैं। यह संचलन इस चुनौती को स्वीकार करता है, अपने विद्यार्थियों को चाहे वह किसी भी धर्म या जाति के हो इस स्थिति में वास्तविकता

को समझने के लिए प्रोत्साहित करता है कि वह अपनी सजग 'विश्वास प्रेरित प्रक्रिया' द्वारा उनका सामना कर सके जो उन्हें सिखाया गया है और जैसा दूसरे महान लोगों ने किया है।

¼ b½ [khLrh; –f'Vdk.k%& चूंकि संचलन ख्रीस्तीय प्रेरणाओं का है इसलिए ख्रीस्तीय आध्यात्मिकता के संदर्भ में यह दृष्टिकोण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं।
(अ) ईश्वर ने हर व्यक्ति को अपने ही रूप और समानता में बनाया है चाहे वह ख्रीस्तीय य हिंदू या मुसलमान हो।

हम जानते हैं कि एक ईश्वर में तीन जन है। त्रित्व व अनिवार्य रूप से एक समुदाय है जिसमें प्रत्येक जन(पिता पुत्र और पवित्र आत्मा) की पूर्ण रूप से प्रेम, सच्चाई और स्वतंत्रता में भागीदारी है। उस समुदाय में समस्त भागीदारी पूरी सच्चाई और पूरी स्वतंत्रता उनकी दृढ़ एकता में पाई जाती है। मानवीय अस्तित्व त्रित्व की समानता एक का एक व्यक्ति है जो उसका नमूना है। और इसलिए मानवीय अस्तित्व एक व्यक्ति है जो समुदाय के लिए है ना कि केवल अपने स्वयं के लिए। मनुष्य इसलिए है कि वह प्रेम से संबंध रखे, ना कि स्वार्थपरता से। स्वतंत्रता से, ना कि भय से; सच्चाई से, ना की कपटता से।

(ब) शुभ संदेश यह है कि एक मानव, योग्य और वास्तविक मान्यताओं सहित व्यक्ति है। त्रित्व का दूसरा जन मानव बना (वचन देह बना) और मानव व्यक्ति को पवित्र बना दिया। इसलिए खिस्तीय प्रेम, सच्चाई और स्वतंत्रता में भागीदारी के लिए है। खुशी का संदेश यह है कि मैं एक व्यक्ति के रूप में प्रेम को सिर्फ लेने के योग्य नहीं परंतु देने के लिए भी स्वतंत्र हूँ। सच्चाई को प्राप्त करने के लिए ही नहीं पर सच्चा बनने के लिए भी हूँ। ख्रीस्त में, ख्रीस्त के द्वारा और ख्रीस्त के साथ हूँ।

एक ख्रीस्तीय होने का अर्थ है– ईश्वर ने मुझे त्रित्व के रहस्य में भाग लेने के लिए बनाया है। मैं एक समुदाय बनाने के लिए बुलाया गया हूँ , हमेशा पूर्ण रूप से और अधिक सचेतन रूप से। इसलिए हम ईश्वर के रूप और उसकी समानता के बारे में जानने के लिए और अधिक प्रयास करें। जब यह रूप और समानता बिगड़ जाती है या विकृत हो जाती है हम उस रूप को फिर से बनाने के लिए संघर्ष करते हैं, कष्ट उठाते हैं। भले ही हमें अपनी मान्यताओं, मनोवृत्तियों तथा गुणों को बदलना क्यों न पड़े। ख्रीस्त की तरह हमें भी न्याय के लिए कष्ट उठाने को तैयार रहना चाहिए

क्योंकि हमारी विजय निश्चित है। ''भरोसा रखो, मैने संसार पर विजय प्राप्त कर ली है।'' (योहन १६:३३) मनुष्य का जीवन संघर्ष करने, जीने और मरने के लायक है। इस जीवित संघर्ष में ईश्वर का रूप और समानता और भी स्पष्ट हो जाएगी तथा उसके राज्य का विस्तार होगा।

(स) व्यवहारिक रूप में एक व्यक्ति को दल और समुदाय बनाने में भाग लेने तथा अपने जीवन में एक उचित स्थान लेने के लिए बुलाया है। हर व्यक्ति को अपनी शक्ति और क्षमता को, अपने संपूर्ण व्यक्तित्व को, अपने दैनिक जीवन की घटनाओं में उस संसार को बनाने के लिए काम में लाना है। इसलिए उसको अपने आसपास की दुनिया की जानकारी के लिए सचेत किया जाता है कि पूजा को जीवन का एक अनुश्ठान बना लें। प्रार्थनाएँ, ईश्वर के साथ संबंध रखने के लिए समारोह के क्षण होते हैं। प्रार्थनाएँ हमारे जीवन से आती हैं और हमारी क्रियाओं को ईश्वर और मनुष्य के प्रति और अधिक अर्थपूर्ण बनाने के लिए फिर से हमारे जीवन में आ जाती है। हमारे जीवन की छोटी सी घटना भी यह बताती है कि ईश्वर हम से किस प्रकार बात करता है। हमारी वचनबद्धता और हमारी प्रतिक्रिया को दर्शाती है। हम एक निश्ठता से देखते हैं और चिंतन करते हैं। क्या हमारी मनोवृत्तीयाँ, मान्यताएँ तथा गुण हमारे जीवन में, प्रार्थनाओं में और पूजन विधि में ईश्वर की सृष्टि को संपूर्ण बनाकर पूरा करने में मदद करती है? या हम अत्याचार शोषण और ईश्वर के समान रूप को विकृत करने वाली शक्तियों और दबाव को लगातार मदद देते हैं?

ख्रीस्त हमें यह बताने आए हैं कि हम किस तरह पूर्ण रूप से मनुष्य बन सकते हैं। किस तरह पिता परमेश्वर के साथ सह सृजन कर्ता बन सकते हैं। पिता ईश्वर को पूर्ण रूप से जवाब दे सकें। किस प्रकार मानव को मुक्त कर सके। मनुष्य को पूर्ण स्वतंत्र करने के लिए हम प्रार्थना और पूजा द्वारा सृष्टि और मुक्ति के रहस्यों की खोज करते हैं। इसलिए हमें ख्रीस्त के साथ और ख्रीस्त मे होना चाहिए– भले ही हम इस संसार में रहते हैं। जो स्वतंत्रता हमें दी गई हैं वह ईश्वर में हमारा विश्वास है। हमें इस स्वतंत्रता को बड़ी जिम्मेदारी के साथ काम में लाना है। हमें इस स्वतंत्रता को अपने विचारों, बातों और कामों में एक सचेतन प्रतिक्रिया देने के लिए काम में लाना है ना कि धर्मनिष्ठ संकल्पों, आकांक्षी–विचारों या तटस्थ कार्यों में। ख्रीस्तीय बुलाहट कार्यों द्वारा प्रेम करने की बुलाहट है जैसा कि ख्रीस्त ने स्वयं किया है। जीवन की हर घटनाओं में, हर परिस्थिति में यह और अधिक पूर्णता से जीने की बुलाहट है।

¼ n½ mi lgkj e% संचलन की आध्यात्मिकता है कार्य करने की बुलाहट, जिसे पूर्ण रूप से समझ लिया हो। यु.खी.छा./यु.छा.सं. मे कार्य केवल एक क्रिया या नेतृत्व करने कुशलता नहीं है; पर यह जीवित और प्रेमी ईश्वर के प्रति सचेतन प्रक्रिया है। ईश्वर जो अपने बच्चों को बुलाते एवं चुनौती देते हैं। यह संचलन इस संसार को 'मानव के रहने योग्य स्थान' यानी ईश्वर का राज्य बनाने के लिए हमारा योगदान है। यह प्रायोगिक विश्वास है कार्य से इनकार करना ईश्वर को इनकार करना है, एक पाप है। संचलन का यह आशय जबरदस्त और चुनौती से भरा हुआ है। ईश्वर मे दृढ़ विश्वास के लिए निरंतर नवीकरण चाहिए और वह धर्मग्रंथ का अध्ययन प्रार्थना एवं चिंतन द्वारा किया जाता है।

यह अपेक्षा करता है कि हम ईश्वर के लिए काम करें। यज्ञ मंडप या मंदिर के सुगंध भरे परिवेश में नहीं और ना अपनी आत्मा की अंतरतम गहराई में; परंतु उस भाई और बहन में जो भूखा, प्यासा, नंगा, बीमार, अकेला...। (मत्ती २५:३१–४६)

यह सचेत करता है कि पाप युवकों तथा वृद्ध दोनों को अन्य की दुरावस्था की ओर अंधा तथा मेरे भाई में ईश्वर की वेदना भरी पुकार सुनने के मार्ग में बाधा बन उन्हें बहरा बना देता है।

यह संचलन विष्वास दिलाता है कि ईश्वर के राज्य की अनुभूति उसी समय होगी जब लोग अपने आप में पूर्ण रूप से न्यायी, सत्संघी और स्वतंत्र बनेंगे।

"यदि किसी काम को करने में डर लगे तो याद रखना यह संकेत है, कि आपका काम वाकई में बहादुरी से भरा हुआ है।"

यु.खी.छा./यु.छा.सं की कुछ गतिविधियाँ

lpyu d dN dk;Øe&

संचलन के अनुभव बतलाते हैं कि पिछले कुछ अध्यायों में बताई गई इस प्रकार की बैठकें दल को बनाने तथा सामाजिक जानकारी बढ़ाने के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है और यही तो इस संचलन का मुख्य उद्देश्य है। पर इस प्रकार के मिलन जो थोड़े समय के लिए होते हैं जिनमें समय की काफी कमी होती है, अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त नहीं है। अतः इनके अतिरिक्त हमें दूसरे कार्यक्रमों की भी आवश्यकता पड़ती है यद्यपि यह बहुत कम होते हैं पर अक्सर बड़े प्रभावकारी सिद्ध हुए हैं।

lgp; fnol

यह एक पूरे दिन का कार्यक्रम होता हैं। इनका मुख्य उद्देश्य यह होता है कि किसी विशेष वर्ग के या एक पूरे क्षेत्र के (शहर या जिला) सदस्यों में मित्रता तथा प्रेम भाव बढ़ाया जाए। क्योंकि इसका मुख्य उद्देश्य सहचर्य है। अतः इसके कार्यक्रम साधारण ही होते हैं। जैसेः टोलियों में बंधकर खेलना, सदस्यों का आपसी परिचय करना, यु.खी.छा./यु.छा.सं के किसी दल या वर्ग के अनुभवों और कार्यों का लेखा–जोखा बताना आदि। इस प्रकार के कार्यक्रम कुछ अग्रदर्शी सदस्यों को आमंत्रित कर संचलन के विस्तार में मदद देते हैं।

इस प्रकार के या इससे मिलते जुलते अन्य कार्यक्रमों में जिनमें विद्यार्थी भाग लेते हैं, अच्छी तरह पूर्व तैयारी कर लेना चाहिए। (स्थान तथा अन्य सुविधाएं, यात्रा कार्यक्रम, नाश्ता, मनोरंजन, प्रार्थना आदी)। व्यक्तिगत संपर्क, विद्यार्थियों द्वारा दिए गए निमंत्रण, पोस्टर द्वारा अच्छा विज्ञापन करना चाहिए, ताकि अधिक से अधिक विद्यार्थी इसमें भाग ले सकें। अक्सर देखा गया है कि हमारे ऐसे अनेक कार्यक्रम पर्याप्त विज्ञापन की कमी के कारण असफल रहे हैं।

v/;kiu fnol

इन कार्यक्रमों के विषयों को ध्यान में रखते हुए कहा जा सकता है कि यह कुछ अधिक वास्तविक तथा 'गंभीर' है। यह कार्यक्रम कुछ अनुभवी सदस्यों के लिए होता है जो किसी विशेष विषय में रुचि रखते हैं। एक विशेष अनुभवी व्यक्ति के मार्गदर्शन में इस विशिष्ट अध्यापन दिवस को 'खोज सत्र' के रूप में आरंभ किया जाता है। वह अनुभवी व्यक्ति इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले हर एक का किसी भी समस्या के प्रति उसके ज्ञान को बढ़ाता है। 'कार्य सत्र' में दल, लेख, नाटिकाओं, लेखा–चित्रों, गानों आदि के माध्यम से 'लेखा–जोखा' की योजना बनाता है तथा अभ्यास करता

है। पूर्व में की गई खोज में भागीदारी करने तथा एक उत्सव के साथ ही इसका समापन होता है। यह उत्सव एक साधारण सभा में, एक प्रार्थना सभा में या पवित्र मिस्सा बलिदान में (सिर्फ कैथोलिकों के लिए) मनाया जा सकता है।

ऊपर बताए गए दोनों कार्यक्रमों में विद्यार्थियों द्वारा लाए गए उनके भोजन के पैकेटों को इकट्ठा कर फिर आपस में मिल बैठकर खाने से बड़े मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ते हैं जिनके अनेक लाभ हैं।

feyu lekjkg

इन समारोहों के मनाने के पीछे बहुदा सामाजिक, धार्मिक घटनाएं होती हैं। राष्ट्रीय दिवस जैसे स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, बाल दिवस, नववर्ष दिवस, विभिन्न संप्रदायों के पर्व जैसे दिवाली, रमज़ान, बड़ा दिन। फिर किसी सम्मानित व्यक्ति, राष्ट्रीय अध्यक्ष या अनुप्राणदाता का स्वागत करना आदि। इन कार्यक्रमों का उद्देष्य है हमारे समाज की अधिक जानकारी प्राप्त करना तथा इसे एक नया रूप देने के लिए अपने को समर्पित कर देना।

Hkze.k

इस संचलन द्वारा भ्रमण के जिन कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है उनके कई उद्देश्य एवं विशेषताएं होती है। साहचर्य बढ़ाने तथा कुछ विश्राम आदि देने के अतिरिक्त व सामाजिक जानकारी में वृद्धि के क्षण होते हैं। अतः इसी बात को ध्यान में रखकर इन की योजना बनाना चाहिए। यदि सदस्यों के लिए एक अच्छी योजना बनाई जाती है तो उनके नेतृत्व करने की शक्ति का विकास होता है।

lekt lsok ;kstuk

चूंकि यु.खी.छा./यु.छा.सं. समाज सेवा योजना मात्र नहीं है फिर भी हम यह विश्वास करते हैं कि इसके सदस्यों की रचना तथा छात्र जगत की आवश्यकताओं के आधार पर ही संचलन की प्रतिस्थापना तथा उद्देश्य और सदस्यों की उम्र तथा अनुभव को ध्यान में रखकर ही इसके कार्यक्रम बनाए जाते हैं। यह कुछ भी करने की एक सामान्य प्रक्रिया ना होकर जीवन के पुनरावलोकन की प्रक्रिया होगी।

इन योजनाओं द्वारा विद्यार्थी अपने आप को, अपनी क्षमता को और उस समाज को जिस में वे रहते हैं और अधिक समझने लगते हैं। उन्हें उस समाज में नेतृत्व की क्षमता का विकास करने तथा सामाजिक और स्वयं की उन्नति करने का प्रशिक्षण दिया जाता है।

कुछ संभावित योजनाएं इस प्रकार है।

- जागरूकता के लिए भ्रमण जिसे 'जागरूकता संबंधित अभियान' रूप से आगे बढ़ाया जा सकता

है। पिछड़े इलाकों, गंदी बस्तियों, गांवों, कारखानों आदि का भ्रमण कर प्राप्त की गई जानकारी को पोस्टरों चलचित्र अथवा विचार–विमर्श द्वारा दूसरों को बताया जा सकता है।

- गरीब लोगों तथा दूसरे धर्म को मानने वालों से अपने संबंध और अधिक बढ़ाकर।
- समाज सेवा योजनाएं, (उनके वास्तविक लगाव के बारे में प्रश्न पूछते हुए) मुफ्त में भोजन व पुस्तकें, निशुल्क शिक्षा, गरीब बच्चों की फीस के लिए धन इकट्ठा करना, कार्य शिविर, परीक्षण, साधन हीन बच्चों के लिए भोज का प्रबंध करना।
- विद्यार्थियों द्वारा उनके ही लिए सहकारी भंडार तथा बैठक चलाना।

uwrRo f'kfoj%&

इस प्रकार के शिविरों का आयोजन लंबे अवकाश के समय किया जाता है तथा ऐसी आशा की जाती है कि वह सदस्य जो पूर्ण रूप से प्रशिक्षित हैं, तथा डिप्लोमा स्तर की योजना रखते हैं, उपाधि प्राप्त करने के पूर्व तीन क्रमिक शिविरों में भाग लें। पहला शिविर नए सदस्यों के लिए होता है जिसमें उन्हें इस संचलन की जानकारी दी जाती है। दूसरा शिविर दल नायकों के लिए होता है जो कुछ समय से इस संचलन में नियमानुसार सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं। तीसरा शिविर सामाजिक जानकारी ज्ञान प्राप्त करने के लिए विशेष कर उनके लिए होता है जिन्होंने शालेय स्तर की पढ़ाई पूरी कर ली है और भविष्य में नए सदस्यों को निर्देशन देने के इच्छुक होते हैं।

igyk f'kfoj

इस प्रकार का शिविर अधिकांश स्थानीय स्तर पर आयोजित किया जाता है तथा प्रमुखतया नए सदस्यों के लिए होता है। इस शिविर का कार्यक्रम विद्यार्थियों के किसी विशेष रूचि को लेकर बनाया जाता है। जैसे व्यक्तित्व का विकास, समुदाय की जानकारी एवं मित्रता या इस संचलन से संबंधित कोई विषय, कोई समाज सेवा कार्य आदि। इस प्रकार के सभी शिविरों में उपरोक्त सभी विषयों के तत्व होते हैं।

nwljk f'kfoj

यह शिविर दलनायकों तथा कुछ अधिक व्यस्त अनुभवी सदस्यों के लिए होता है जिन्होंने पहले शिविर में भाग लिया था। ठसका आयोजन जिला या संभाग स्तर पर किया जाता है। इस शिविर में निम्नलिखित विषयों पर अध्ययन किया जाता है।

१. व्यक्तित्व का विकास आपसी संबंध में वृद्धि 13 से 19 वर्ष के बालकों के मनोविज्ञान पर चिंतन और दल में रहने का अनुभव।
२. वर्तमान भारत की निश्चित एवं अनुचित वास्तविकताए।
३. संचलन का पूर्ण विवरण – इसका अंतर्राष्ट्रीय एवं भारतीय इतिहास, इसकी प्रतिस्थापना तथा उद्देश्यों के वचनबद्धता की एक झलक।

४. यु.खी.छा./यु.छा.सं. के अनुप्राणदाता की भूमिका तथा उसके गुण –विशेषकर विद्यार्थी दल के नायक अध्यक्ष सचिव तथा कोषाध्यक्ष के।
५. संचलन को आरंभ करने की विधियां..... दल तथा संपर्क समूह।
६. दल का संगठन करना तथा विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाओं के लिए बैठकों का आयोजन करना।
७. स्थानीय यु.खी.छा./यु.छा.सं. की उपलब्धियों एवं अनुभवों में भागीदारी।
८. इस संचलन के अनुभवी सदस्यों से अनुभव प्राप्त करना।
९. आगामी वर्ष के लिए कार्यक्रम तथा विषय वस्तु का निर्धारण।

rhljk f'kfoj

यह शिविर क्षेत्रीय अथवा राष्ट्रीय स्तर पर होता है और विशेषकर उनके लिए होता है जो उपाधि प्राप्त करने वाले होते हैं। इस शिविर में सामाजिक ज्ञान तथा उसके विश्लेषण पर विशेष ध्यान दिया जाता है। सदस्यों को उनकी बुलाहट के अनुसार प्रोत्साहित किया जाता है। इस शिविर में जिन बातों पर विशेष ध्यान दिया जाता है वह इस प्रकार हैं।

१. भारत की स्थिति।
२. आर्थिक सामाजिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में शोषण करने वाले प्रमुख तत्व।
३. समाज के प्रति धर्म और संस्कृति की भूमिका, विभिन्न माध्यमों एवं शिक्षा प्रणालियों द्वारा बताई गई हमारी मनोवृत्तियों, मान्यताओं तथा मानसिकता पर चिंतन।
४. भारत में असमानता, बेरोज़गारी एवं गरीबी को कैसे हल किया जा सकता है।
५. नए भारत की रचना करने में विद्यार्थियों का योगदान, विद्यार्थियों में किस प्रकार सामाजिक ज्ञान की वृद्धि की जाए तथा किसी के जीवन के प्रति उसकी रुचि को समझना।
६. विभिन्न धर्मों के मानने वाले विद्यार्थियों के साथ मिलकर किस प्रकार काम किया जाए।
७. संचलन में सम्मिलित विद्यार्थियों तथा दलों से गहरा संपर्क रखना।
८. इस संचलन के दृश्टिकोण समर्पण कार्य प्रणाली तथा इसकी आध्यात्मिकता का गहरा अध्ययन।

युवा कार्यकर्त्तओं के लिए (ANIMATORS)

1- mifLFkfr% युवाओं के साथ आपकी उपस्थिति अधिक मायने रखती है। युवा आपको उनके बीच देखना चाहते हैं। आपकी उपस्थिति कई गलतियों को रोक सकती है।

2- igy djk % उनके अच्छे कार्यों को बधाई दो, सराहना करो। उनसे बात करो, उन पर मुस्कुराओ। वह आपसे आके बात करने की प्रतीक्षा न करें, पर आप पहल करो।

3- mu phtk ij ckr djk ftu ij mudk fnypLih g: उनकी रुचियां सबसे पहले आती हैं, भले ही ये रुचियां आपको अजीब लगती हों।

4- ifjfpr jg] vyx u jg % हमें युवाओं के साथ रहना चाहिए, उनसे परिचित रहने से वह हमसे अलग नहीं होते। हमें खुद भी उनसे अलग नहीं रहना चाहिए।

5- ;okvk dh udy u dj % भाषा, पोशाक तथा व्यवहार में युवाओं की नकल न करें। उनकी तरह दिखने की, बात करने की कोशिश न करे।

6- rdlxr % आपके हर निर्णय के लिए या कोई भी विचार के लिए तर्कसंगत रहें। (be reasonanle) आपका उद्धेश्य उनको जीतना है और अनके विचारों को विकसित करना है।

7- ;okvk l ijke'k dj % हर छोटी बडी बात को युवाओं से भी परामर्श करें। कोई भी निर्णय लेने से पहले उनसे एक बार परामर्श करना उचित है।

8- l/kkjk ij viekfur u djk % युवाओं को अकेले में सुधारना अच्छा है। सबके सामने किसी को भी अपमानित न करें।

9- funk;h u cu % किसी के शारीरिक दोष व चरित्र को लेकर निर्दयी न बनें। उनको समझने की कोशिश करें।

10- n.M o ltk u n % किसी युवा को दण्ड व उसकी गलती का शारीरिक सजा न दें।

11- bekunkj cu% अपनी गलतियों को स्वीकार करें और सुझावों और आलोचनाओं को स्वीकार करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो युवा आपको सम्मानित करेंगे।

12- viu dk;l e fofo/krk yk; % कोई भी कार्य जो आप आयोजित करतें है, उसमें विविधता लाने की कोशिश करें। एक ही चीज़ को बार बार न दोहराएँ।

13- fpru o fopkj dju e mudh lgk;rk dj% युवाओं को सोचने में मजबूर करें, ऐसा न कि आप सब कुछ उनके लिए बना बनाया दें।

14- i'klk dj % युवाओं की प्रशंसा करने में कंजूस न बने। हर छोटी बडी बात की सराहना करें।

15- fu"i{k jg %विशेष दोस्त न बनायें, सबके साथ आपका व्यवहार बराबर रहे।

bu lHkh ;fä;k dk ,d fl)kr e l{kfir fd;k tk ldrk gA ;ok dk u doy I;kj dju dh t:jr g] cfYd mUg yxuk pkfg, fd o gekj fy, I;kj gA

अनुप्राणदाता में होनेवाले गुण

1-njn'khZ % वह उच्छ आदर्श और आशएँ रखता है और उसे प्राप्त करने में विश्वास रखता है। ऐसा व्यक्ति अपनी अद्भुत कल्पना शक्ति और बुद्धिमत्ता के ज़रिए पहले ही भविष्य की योजनाओं को तैयार कर लेता है। उनके पास प्रत्येक कार्य के लिए एक स्पष्ट योजना होती ही है, इसके अलावा वे दूसरी योजना (back up plan)भी हमेशा तैयार रखते है।

2- ifrc)rk % किसी भी समस्या का सामना करना तथा लोगों के हर कार्य मे प्रतिबद्ध रहना।

3- ekuoh;rk % स्वयं और दूसरों की कमियों को स्वीकार करता है और अपने आदर्श तथा मुल्यों के अनुसार जीने के लिए संघर्ष करता है।

4- vkRefo'okl@vk'kkokn % खुद में विश्वास रखता है कि वह कोई काम कर सकता है और साथ ही अन्य लोगों में भी वह विश्वास रखता है। अपनी क्षमता पर उसे थोडा सा भी संदेह नहीं होना चाहिए। आत्म विश्वास, सफलता का प्रथम रहस्य माना जाता है। तो व्यक्ति आत्म विश्वास से भरपूर और निडर नहीं होते वह अच्छा नेत्रत्व नहीं कर पाते।

5- fu.k; ysus dh {kerk % एक अच्छे अनुप्राणदाता के पास तुरंत और बेहतर निर्णय लेने की क्षमता होनी चाहिए। वह अपने निर्णय बार बार नहीं बदलता।

6- vkn'kksZ vkSj fl)kUrksa ds ifr fu"Bk % अनुप्राणदाता के अंदर आने आदर्शों और सिद्धांतों के प्रति अटूट निष्ठा होनी चाहिए। लोग उसी व्यक्ति के आदेशों पर चनना चाहतें है जिसकी कथनी और करनी में कोई अंतर न हो।

7- ldkjkRed nf"Vdks.k % एक अच्छे अनुप्रणदाता के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण होना ज़रूरी है। ऐसे व्यक्ति को दुनिया की कोई चीज़ उसका उद्वेश्य हासिल करने से नहीं रोक सकती।

8- lkgl % एक अदम्य साहसी होना अनुप्राणदाता के लिए आवश्यक है। साहसी होने का अर्थ है, डर को जीतना मुश्किलों का सामना करना और चुनौतियों को स्वीकार करना है।

9- ftEenkjh Lohdkj djuk % एक अच्छा अनुप्रणदाता अपने हर कार्य के प्रति ज़िम्मेदारी निबाता है। वह न सिर्फ अपना बल्कि अपने साथियों की गलतियों के प्रति ज़िम्मेदार होता है। ज़िम्मेदार होने का यह अर्थ है कि अपने भीतर सहकारिता की प्रवृत्ति का विकास करना और एक दूसरे का सहयोग देना है।

10- fuEerk vkSj 'kkyhu 0;ogkj % अनुप्राणदाता का व्यवहार सभ्य होना चाहिए। महान पुरूष की पहली पहचान उसकी विनम्रता है।

11- mRlkgh vkSj ifjJeh % एक अनुप्राणदाता जो असंभव को संभव बनाना चाहता है, उसमें काम करने का उत्साह और परिश्रम करने की इच्छा होनी चाहिए।

12- vkRe fu; af=r vkSj vuq'kkfl r % जो व्यक्ति अपने व्यवहार, वाणी, और कार्यों को ज़िम्मेदारी और अपेक्षाओं के अनुसार नियंत्रण में रख सकता है, वह दूसरों को सही नेत्रत्व दे सकता है।

13- lgu'khy % अनुप्राणदाता का स्वभाव सहनशील होना चाहिए। जीवन मे सब कुछ अपनी इच्छा के अनुसार नहीं चलता, कभी भी कोई भी समस्या या परेशानी सामने आ सकती है। इसलिए ऐसे अवसरों पर सहनशील होना ज़रूरी है।

14- Li"Vokfnrk vkj fo'okluh;rk % हर अनुप्राणदाता को अपने टीम के साथ मिलके काम करने की क्षमता होनी चाहिए। व्यवहार में सरलता और स्पष्टता होना भी आवश्यक है।

15- mnkj vkj lgkuHkfr.k lkp % उदारता जहाँ मनुष्य के भीतर एक दैवीय सद्गुण है, वहीं कठोरता एक दुर्गुण है। उदारता व्यक्ति के व्यक्तित्व को बनाती है। उदार होना का अर्थ है आत्मीयता का विस्तार करना और दूसरों की श्रेष्ठता का सम्मान करना है।

iwoZ funs'kd ,oa inkf/kdkjh

jk"Vªh; vuqiz.kknkrk (Animators):		jk"Vªh; lg;kstd (co-ordinators):	
1. सि० जॉन देवोस	1969 – 1975	श्री. सय्यद अकरम	1986 – 1988
2. फा० जोनी मोंतेरो	1975 – 1979	श्री. विन्सेंट रॉड्रीगस	1991 – 1993
3. फा० इरूदयम	1980 – 1983	सि० ऐल्सा पी.बी.वि.एम.	1993 – 1995
4. फा० एम. सी. माईकल	1983 – 1989	सि० सेन्वी एस.एस.पी.एस.	1995 – 1998
5. फा० निन्सेंट मोंतेरो	1989 – 1995	सि० जेस्सी मेरी एस.एस.पी.एस.	1998 – 2001
6. फा० प्रकाश सागिली	1995 – 2001	सि० मेरी मार्गरेट एस.एस.पी.एस.	2001 – 2004
7. फा० आई पीटर	2001 – 2007	सि० जेन	2004 – 2007
8. फा० विन्सेंट अरोक्यदास	2007 – 2010	सि० मार्गरेट मथाई	2008 – 2009
9. फा० चार्ल्स मिनेज़स	2010 – 2016	श्री. लियो जोसेफ	2010 – 2013
10. फा० चेतन मचादो	2016	सि० लिड्विन फर्नांडिस	2018 – 2019

jk"Vªh; v/;{k ¼Nk=½ conveners:

1968 – 1969	मेरी एन्न डिसोज़ा	1969 – 1972	ऐग्नेस / जोसेफ स्वामी
1972 – 1974	अलवीटो बारेटो	1974 – 1976	अलेक्स रॉड्रीगस
1976 – 1978	जीन डिकुन्हा / करीन डिसोज़ा	1978 – 1979	जॉर्ज जोसेफ
1979 – 1980	क्रिस्टी माईकल	1980 – 1983	आनंद किशोर
1983 – 1986	मेरी मार्गरेट	1986 - 1989	विन्सेंट रॉड्रीगस
1989 – 1992	जेसिम पाय्स	1992 – 1995	जूलियस फर्नांडिस
1995 – 1998	जोशुआ अलमेडा	1998 – 2001	रीटझ डिसोज़ा
2001 – 2004	रोशेल कुटिन्हो	2004 – 2007	विन्सटन डिसोज़ा
2007 – 2010	सुज़ान टोपनो	2010 – 2013	जॉय्स जोन डिंफना
2013 – 2016	जिम्मी पदांग	2016 – 2019	जेस्वीटा क्वॉड्रस

,f'k;kbZ Vhe esa Hkkjr ls.....

1974 – 1981	सि० जॉन देवोस	ऐशियन चापलैन	चेन्नई
1977 – 1982	अलविटो बरेट्टो	ऐशियाई संयोजक	सिगापूर
1977 – 1981	फा० जोनी मोंतेरो	अंशकालिक चापलैन	चेन्नई
1981 – 1982	जोन सिद्धम	ऐशियाई संयोजक	सिगापूर
1982 – 1985	अलेक्स रॉड्रिगस	ऐशियाई संयोजक	सिगापूर
1985 – 1988	समीर बेंगरा	ऐशियाई संयोजक	सिगापूर / होंगकोंग
1988 – 1990	फा० जो नेलियत	ऐशियन चापलैन	होंगकोंग
2000 – 2003	मनोज मैथ्यू	ऐशियाई संयोजक	मनीला
2003 – 2006	फा० विन्सेंट मोंतेरो	अंशकालिक चापलैन	मैंगलूर
2009 – 2010	दीपक राज	ऐशियाई संयोजक	मनीला
2009 – 2012	फा० जेम्स चाको	अंशकालिक चापलैन	मनीला
2017 – 2018	जिम्मी पदांग	ऐशियाई संयोजक	मनीला

vUrjk"Vªh; Vhe esa Hkkjr ls.....

1974 – 1978	ऐग्नेस जोसेफ	टीम सदस्य	पेरिस
1985 – 1986	जोन सिद्धम	महासचिव	पेरिस
2003 – 2007	मनोज मैथ्यू	महासचिव	पेरिस
2016 -	फा० चार्ल्स मिनेज़स	अंतराष्ट्रीय चापलैन	पेरिस

,f'k;kbZ Vhe esa lykgdkj lnL; Hkkjr ls.....

2000 – 2003	फा० प्रकाश सगिली	सदस्य	चेन्नई

vUrjk"Vªh; Vhe esa lykgdkj.....

2011 – 2014	मनोज मैथ्यू	सदस्य	नई दिल्ली

jk"Vªh; vf'kdkfyd lqlekpkj.....

2016 – 2017	अपर्णा बाबू	2017-2018	मिराश मैथ्यू

"सिर्फ मरी हुई मछली को पानी का बहाव चलाती है जिस मछली में जान होती है वह अपना रास्ता खुद बनाती है।"

अध्ययन सत्र और राष्ट्रीय परिषद के विषय

v/;;u l= vkj jk"Vh; ifj"kn	frfFk@o"k	t xg	fo"k;
पहला अध्ययन सत्र	1966		Leisure activities
दूसरा अध्ययन सत्र	1967		Encounter with Christ
तीसरा अध्ययन सत्र	1968		Who am I?
चौथा अध्ययन सत्र	1969		At home in today's world.
पाँचवा अध्ययन सत्र पहला राष्ट्रीय परिषद	28 दिसं 69 – 1 जनवरी 70	पूना	Say it as it really is.
छठवाँ अध्ययन सत्र	1971		Towards a world without refugees
सातवाँ अध्ययन सत्र दूसरा राष्ट्रीय परिषद	7 – 13 मई 1972	बैंगलूर	The world around us: our concern.
आठवाँ अध्ययन सत्र तीसरा राष्ट्रीय परिषद	22 – 29 मई 1975	बैंगलूर	My response to our people.
नवाँ अध्ययन सत्र	1977		A new India: my responsibility.
दसवाँ अध्ययन सत्र चौथा राष्ट्रीय परिषद	27 दिसं 77–2 जनवरी 1978	नागपुर	My school today and tomorrow.
ग्यारहवाँ अध्ययन सत्र	1979		Reaching out the deprived child.
बारहवाँ अध्ययन सत्र पाँचवाँ राष्ट्रीय परिषद	17 – 27 मई 1980	पूना	Education for our people.
तेरहवाँ अध्ययन सत्र	1981		Education for a fuller life
तेरहवाँ अध्ययन सत्र छठवाँ रायष्ट्रीय परिषद	18 – 28 मई 1983	कूनूर	Option for the poor (Part – I) in the school
पंद्रहवाँ अध्ययन सत्र	1984		Option for the poor (Part - II) in the society
सोलहवाँ अध्ययन सत्र सातवाँ रायष्ट्रीय परिषद	18 – 28 मई 1986	राँची	Students moved by faith towards option for the poor
सत्रहवाँ अध्ययन सत्र आठवाँ रायष्ट्रीय परिषद	14 – 24 मई 1989	काज़ीपेट	God experience. Mass Media and Education

अठारहवाँ अध्ययन सत्र नवाँ रायष्ट्रीय परिषद	15 – 25 मई 1992	मैसूर	Communal Harmony, Education of the heart and environment
उन्नीसवाँ अध्ययन सत्र दसवाँ रायष्ट्रीय परिषद	18 – 28 मई 1995	मद्रास	Learn to Live, Live to Grow, Grow to Change
बीसवाँ अध्ययन सत्र ग्यारहवाँ रायष्ट्रीय परिषद	14 – 24 मई 1998	कलकत्ता	Enlightening the people for harmonious living God's Challenge today.
इक्कीसवाँ अध्ययन सत्र बारहवाँ रायष्ट्रीय परिषद	14 – 24 मई 2001	सिकंदराबाद	Believe in Children's Dignity - Strengthen their Rights.
बाईसवाँ अध्ययन सत्र तेरहवाँ रायष्ट्रीय परिषद	9 – 19 मई 2004	गोवा	Children, Image of the Divine, Ensure fullness of Life
तेईसवाँ अध्ययन सत्र चौदहवाँ रायष्ट्रीय परिषद	11 – 18 मई 2007	कोवलम, चेन्नई	Empowering relation-ships for sustainable justice and peace
चौबीसवाँ अध्ययन सत्र प्रद्रहवाँ रायष्ट्रीय परिषद	14जी – 20 मई 2010	मैंगलूर	Responding to God's call to be simple, sincere and sensitive persons, let us envision and build a green and harmonious world
पच्चीसवाँ अध्ययन सत्र सोलहवाँ रायष्ट्रीय परिषद	17 –28 मई 2013	बेथेल, शिलोंग	Students' Education in Modern Era
छब्बीसवाँ अध्ययन सत्र सत्रहवाँ रायष्ट्रीय परिषद	16–22 मई 2016	नोएडा, दिल्ली	Called to believe, begin, become
सत्ताईसवाँ अध्ययन सत्र अठारहवाँ रायष्ट्रीय परिषद	17–24 मई 2019	गोवा	'Students for youthful life'

राष्ट्रीय सम्मेलन			
पहला राष्ट्रीय सम्मेलन	18–22 मई 2014	भोपाल	Explore, Experience, Exchange
दूसरा राष्ट्रीय सम्मेलन	21–26 मई 2017	कोलकत्ता	Called to believe, begin, become

राष्ट्रीय कार्यालय की गतिविधियाँ

– राष्ट्रीय अनुप्राणदाता टीम (NTA) व राष्ट्रीय कार्यकारी सभा
– राष्ट्रीय अनुप्राणदाता (NTA) व राष्ट्रीय कार्यकारी प्रशिक्षण
– राष्ट्रीय अनुप्राणदाताओं के लिए तथा चापलैन प्रशिक्षण
– अंतर क्षेत्रीय नेत्रत्व प्रशिक्षण
– राष्ट्रीय छात्र नेत्रत्व प्रशिक्षण
– राष्ट्रीय कार्यशाला
– क्षेत्रों और धर्मप्रांतों का दौरा
– राष्ट्रीय परिषद
– राष्ट्रीय सम्मेलन

,f'k;kbZ vkSj vrjk"Vªh; dk;Zdze%

– दक्षिण एशियाई सत्र (SAS)
– एशियाई सत्र और परिषद (ASC)
– चापलैन और अनुप्राणदाता प्रशिक्षण (CAFÉ)
– अंतराष्ट्रीय संयोजन (IC)
– विश्व परिषद (WC)
– अंतराष्ट्रीय प्रशिक्षण सत्र (GTS)

– n lpZ **(The Search):** राष्ट्रीय संचलन का द्वै–मासिक समाचार पत्र है। यह 1985 से नियमित रूप से प्रकाशित होता आ रहा है। यह छात्रों की भावनाओं और अनुभवों को कलमबद्ध करने में मदद करता है।

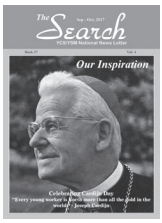

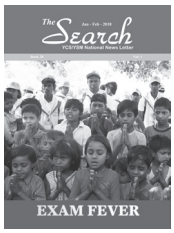

यु.खी.छा. /यु.छा.सं. का लक्ष (सपना) और समर्पण

यह लेख दिसंबर 1977 में नागपुर में राष्ट्रीय परिषद की चौथी सभा में भाग लेने वाले सदस्यों द्वारा तैयार किया गया था यह इस संचलन की कुछ विचारधाराओं को प्रतिबिंबित करता है। जब हम एक नए समाज की स्थापना की बात करते है, यह जानना ज़रूरी है कि वर्तमान में क्या समस्यायें है। यहाँ पर दो पक्ष रखे गये है जो अच्छा है जिसे हम छात्राओं को और बेहतर बनाना है और दूसरा पक्ष जो हमें शर्मिंदा करता है, जहाँ नयापन लाना है।

Hkkjr orZeku esa

v- mTtoy i{k%&

भारत अपने प्राकृतिक सौंदर्य संपत्ति के लिए भाग्यशाली है जिस पर हमें गर्व है। प्राकृतिक दृश्यों का मनमोहक आकर्षण अनेकों पर्वतीय प्रदेश हमारी सांस्कृतिक संपत्ति जो हमारे अतिथि संस्कार में प्रतिबिंबित होती है हमारे लोगों की सहन शीलता तथा उनका जीवन चक्र आदि कुछ ऐसी बातें है जिन पर हम गर्व का अनुभव करते हैं और जो विदेशियों को भी अपनी ओर आकर्षित करता है। भारत में खनिज पदार्थों के अनेक खान है यह तकनीकी का विस्तृत ज्ञान है तथा तीव्र गति से विकसित होने वाले अनेकों उद्योग है जो भारत की भावी आर्थिक दशा का उज्वल भविष्य लिए हुए हैं। हमारी समाजवादी सरकार और एक संविधान है जो हर व्यक्ति को अपना अस्तित्व बनाए रखने तथा अपने ही ढंग से जीवित रहने की गारंटी देता है।

c- nwljk i{k%&

दूसरी तरफ देश की बहुत सी बातों के लिए हम शर्मिंदा हैं अपने प्राकृतिक साधनों का ध्यान नहीं रखा जाता भारत सिर्फ निर्धनता का ही देश नहीं है पर सामाजिक और आर्थिक शर्माऊं असमानता का भी देश है जहां धन जाति और धर्म के आधार पर लोगों के वर्ग है हमें छुआछूत अशिक्षा, बेरोज़गारी, घूसखोरी, भ्रष्टाचार, फूट जैसी अनेक बुराइयों का सामना करना पड़ता है। हमारे समाज में विशेषकर पिछड़े वर्ग को ऊपर उठने के लिए पर्याप्त सुविधाएं नहीं दी जाती है और अगर दी भी जाती है तो उनका सदुपयोग नहीं किया जाता है।

l- ikB’kkyk e%&

यह परिस्थिति खुद की हमारी पाठशालाओं में दिखती है। यह सर्वविदित है कि फूट और बेईमानी जैसी बुराइयाँ हमारे विद्यार्थियों में व्याप्त है जबकि हमारी शिक्षा प्रणाली स्वयं भी विद्यार्थियों को सामाजिक रूप से सतर्क बनाने और उसके लिए अपने आप को समर्पित करने तथा जीवन में संघर्ष करने के लिए आत्मविश्वासी बनने में पर्याप्त सहायता नहीं कर रही है।

l{kk e%&

इस प्रकार भारत में स्पष्ट रूप से विशेष कर दो समुदाय है। एक वह जो भारत पर गर्व करता है, दूसरा वह जो उस पर शर्मिंदा है। अतः इस पर हम विश्वास करते हैं कि यह स्थिति जो मौलिक रूप से अनुचित और अन्यायपूर्ण है जो वास्तव में हर व्यक्ति को अपना स्वत्व बनाए रखने का मौका नहीं देती, उसे बदला जा सकता है और अपने संयुक्त प्रयासों द्वारा हम एक नए भारत की रचना कर सकते हैं।

,d LoIu%&

भारत जैसा हम चाहते हैं जब हम आगे की ओर देखते हैं तो हमें यह मालूम है कि भारत एक ऐसा देश है जो सच्चाई, न्याय, प्रेम, बंधुत्व, समानता और एकता पर बसा है। यह एक ऐसा स्थान होगा जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को न्याय, शिक्षा, रोजगार, मकान और स्वास्थ्य एवं सफाई की हर सुविधा प्राप्त होगी। जहाँ पिछड़े वर्ग और हरिजनों को अपना विकास करने के लिए पूर्व प्रोत्साहन दिया जाएगा और जहाँ भ्रष्टाचार, घूसखोरी, छुआछूत, और अमानवीय निर्धनता नहीं होगी। और न धन, जाति व धर्म के आधार पर कोई विषमता होगी, पर धनवानों का निर्धनों के साथ उदार संबंध होगा। हमारा भारत एक ऐसा स्थान होगा जहाँ पर परिवार के सदस्य ईश्वर को प्रेम करने वाले तथा एक दूसरे की भावनाओं को समझने वाले होंगे। जहाँ की पाठशालाओं में विद्यार्थी हर एक के प्रति ईमानदारी की भावना पैदा करेंगे, आपस में तथा अपने शिक्षकों के साथ एकता बनाए रखेंगे और सद्भावना, समानता तथा सहयोग को बढ़ावा देंगे।

...- 0;g jpuk

v- ;ok Nk=k d: i e%&

ऊपर बताया गया हमारे सपनों के भारत की सृष्टि करने के योग्य हम तब तक नहीं होंगे जब तक कि अपना और अपने छात्र जगत का विकास और उन्नति नहीं करते। इसलिए हमें यह ज्ञान होना चाहिए कि हमें हमारे आसपास, पाठशाला, परिवारों, पड़ोस और समाज में क्या हो रहा है। हमें उचित प्रवृत्तियों और मान्यताओं का विकास करना चाहिए और नेतृत्व करने की कुशलता प्राप्त करनी चाहिए जो कि हमें अपने छात्र जगत की उन्नति करने के योग्य बना सके।

c- ;-d-Nk-@;-Nk-l- d: lnL;k d: i e%&

हम यह विश्वास करते हैं कि यह उस हालत में किया जा सकता है जबकि सर्वप्रथम ईश्वर से नाता जोड़े और आपस में अपने व्यक्तिगत संबंध मजबूत बनाएँ, अपने

शिक्षकों से अपना संबंध गहरा करें साथ ही साथ अपने सहपाठियों और पड़ोसियों से भी अपने व्यवहार और दूसरों के साथ अपने कार्यों में आदर और इमानदारी के भाव का विकास करें। अपने समय तथा धन के खर्च में सचेत रहे। सामाजिक कार्य करें जो हमारे सामाजिक ज्ञान को बढ़ाएगा तथा निर्धनों, पद दलितों, जरूरतमंदों के साथ और उनके ही लिए कार्य करें। (जैसे शिक्षा कार्यक्रम को हाथ में लेकर)

†- gekjk R;kx leiZ.k

अपने देश की वर्तमान परिस्थिति को ध्यान में रखकर हम भारत के भविष्य के लिए यु.कै.छा./यु.छा.सं के सदस्य राष्ट्रीय परिषद की चौथी सभा में अपने आप को अपनी संपूर्ण योग्यता के साथ समर्पित करने के लिए एकत्र हुए हैं भले ही इस कार्य में कितनी ही बाधाएं क्यों ना आए हम एक नए भारत की रचना करेंगे।

यह संचलन नेताओं को तैयार करने का कार्य हाथ में लेगा जो दिल और दिमाग से परिपक्वता प्राप्त करेंगे और इस मामले में प्रगतिशील उत्तरदायित्व उठाने के योग्य होंगे हम दूसरे संचलनों से भी हाथ मिलाएंगे जिन की प्रतिस्थापना एवं कार्य सच्चाई में प्रेम और शांति हमारे ही समान होगी क्योंकि हम यह विष्वास करते हैं कि वह ईष्वर ही तो है जो हमें इस महान कार्य के लिए चुनौती देता है।

Hkkjrh; ;qok-d¼Nk-@;qok-la dh fu;e%

(Kindly refer English version. Constitution in Hindi will be published soon after the 18th National Council, Goa.

"जिंदगी जीना आसान नहीं होता; बिना संघर्ष के कोई महान नहीं होता; जब तक न पड़े हथौड़े की चोट; पत्थर भी भगवान नहीं होता।"

OATH TAKING

I, (Name) / do solemnly affirm / that I will / to the best of my ability / execute the duties and responsibilities / as the _____ (position) / representing _____ (unit/ diocese/ region/ India) / that I will participate / in all the movement activities without fail / and promise to accept and live / the methodology and the spirituality of the movement. I will dutifully uphold and preserve / the Constitution of Young Catholic Students/ Young Students Movement / and its aims and objectives. I take this pledge / fully knowing my responsibility / asking strength from God / the loving Father / to live up to the trust / placed in me / and work with the students and animators / for the welfare of the movement and society / to change myself and to change others / to Build a New Society- God's Kingdom.

YCS YSM Anthem

Ch: Let YCS light shine, Let YSM light shine
Let our light shine, bright and clear, For all the world to see

1. True to our own motto build a just society [2]
With peace and equity freedom and love, National Integrity [2]

2. See Judge and Act our review of life [2]
Let communal harmony, human dignity, Reign in our land and the world [2]

THIS LITTLE GUIDING

1. This little guiding light of mine, I am going to let it shine (3)
Let it shine all the time let it shine
2. Hide it under a bushel oh! no, I am going to let it shine (3)
Let it shine all the time let it shine
3. Take my little lamp 'round the world, I am going to let it shine (3)
Let it shine all the time let it shine

राष्ट्रीय अनुप्राणदाता - चाप्लैन

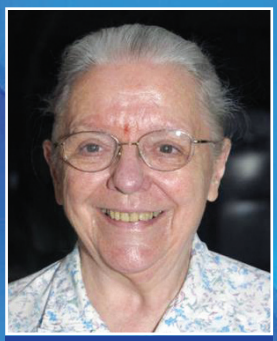

fLkZ tku nokl
1969 – 1975

QkZ tkuh ekrjk
1975 – 1979*

QkZ ,e lh eidy
1983 – 1989

QkZ foUlsV ekrjk
1989 – 1995

QkZ iidk'k lxhyh
1995 – 2001

QkZ vkbZ ihVj
2001 – 2007

QkZ foUlsV vjkD;nkl
2007 – 2010

QkZ pkYlZ feustl
2010 – 2016

QkZ pru epknk
2016 –

* QkZ b#n;e, 1980 & 1983

YOUNG CATHOLIC STUDENTS
INDIA
YOUNG STUDENTS MOVEMENT